श्री चक्रेश्वर स्तुतिः

Shri Chakreshvara Stutih

प्रिय बिन्दु तर्पण परा

(PRIYA BINDU TARPAN-PARÂ)

Edited, Translated and Annotated by:

Dr. Chaman Lal Raina

Published by

A. D. Veshin

यत्तेजो निधिभि स्त्वनन्त-घृणिभि-र्नोपाह्यते प्रेरितुं।
हार्द ध्वान्तमपास्य शिक्षणपि तद्धयान मात्रा दृशा।।
यत्सद्भादानुभाति सर्वमुदितं भानुं यथा पद्मिनी।
प्रत्यग्दाम नमामि तत्तव वपुः श्री राज राजेश्वरी।।

क्लीं ह्रीं ऐं सौः

बिंदु के स्पन्दन से सदृश्यता के अनंत आनंद
की ओर जाने का आभास
अद्भुत होता है, जो प्रतीकात्मकता से
स्वज्ञान की ओर ले जाता है।

श्री चक्रेश्वर स्तुतिः

Shri Chakreshvara Stutih

प्रिय बिन्दु तर्पण परा

(PRIYA BINDU TARPAN-PARÂ)

श्री यंत्र

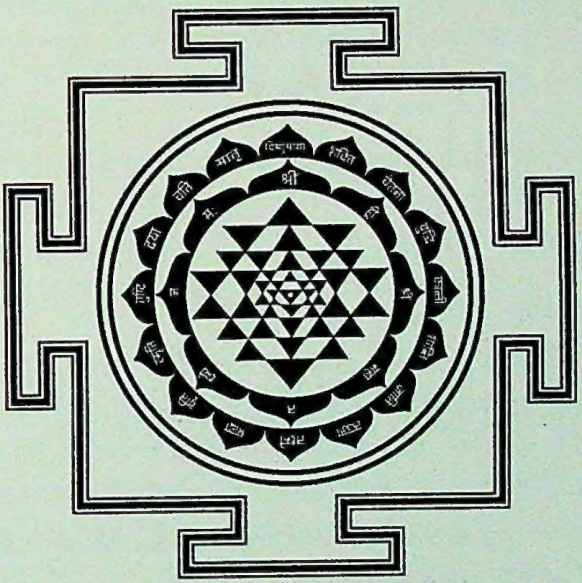

ऊँ श्री चक्रेश्वराय तर्पणपराय नमः

Edited, Translated and Annotated by:

Dr. Chaman Lal Raina

Published by

A. D. Veshin

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner.

Publication Year : 2020

© Copyright : Dr. Chaman Lal Raina

Price : Rs. 200/-

Published by :
Arjan Dev Vishen
House No. 193, Jalvayu Vihar, Sector 25,
Noida, UP - 201308, Ph.: 8586058490, 9910880143

The Cover picture of Shri Sharika Chakreshvari has been Painted by Smt. Shubha Verma.

Printed by :
Astha Commercial Centre
Vikaspuri, New Delhi.

दो शब्द

(प्रकाशक की ओर से)

भगवती श्री शारिका पातु नः।

माता श्री शारिका से यही प्रार्थना है कि हम को 'पातुनः सा भगवती' पवित्र करे। एक पवित्र आत्मा में ही परमात्मा 'समाहित' होता है। पर यह तभी होगा, जब माता शारिका का प्रगाढ़ प्रेम होगा, तथा प्रेमाग्नि ही अन्तरात्मा के मल को भस्मसात् करने में समर्थ हो। जो माता की स्तुतिः व गुणगान से सम्भव होता है।

मैं रैणावारी निवासी हूँ, अतः शारिका माता के प्रांगण में ही हमारा वास था। मूढ़-बुद्धि क्या स्तुति कर सकता है जहाँ वाचस्पति, बृहस्पति की वाणी भी कुण्ठित है, फिर भी मुझ मूर्ख की, माता के प्रेम से ओतप्रोत, कुछ स्मृतियाँ माता के मन को मुदित करेंगी। मुझे पूरा विश्वास है!

जैसे बालक की तोतली असमंजस भाषा माता के हृदय को आह्लादित करती है वैसे ही। मैं कोई दार्शनिक, कोई पण्डित, कोई विद्वान नहीं हूँ, पर माता के हृदय में मेरे प्रति वात्सल्य है, और मुझे भी शारिका का अनुराग है। अतः चन्द स्मृतियों का वर्णन श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति ही है।

मूलतः रैणवारी के निवासी होने से प्रायः हम हारी पर्वत की परिक्रमा करते थे-विशेषतया परीक्षा के दिनों में, ताकि उत्तीर्ण हो जाए। बाल्यकाल के एक समय की बात है कि मैट्रिकुलेशन की परिक्षा समाप्त हुई थी। मेरी आयु 12-13 वर्ष की थी, उन दिनों ऐजबार नहीं होता था। मैं अपने मुहल्ले के सहपाठियों के साथ परिक्रमा करने जाया करता था। एक बार उन्होंने नही बुलाया। क्रोध में आकर मैंने अपनी माता से कहा,"मुझे कल प्रातःकाल मे ही जगाना"। दूसरे दिन माता ने कहा, "उठो! देर हो गई।" नींद से जागा। श्री महागणेश के पास पहुँच गया। मार्ग मे कोई नही मिला। द्वार बन्द था। उसी समय एक वृद्ध पुरूष ने आकर आवाज दी। द्वार खुला। पूजा की। उसी वृद्ध के पीछे-पीछे निकला। थोडा भयभीत भी हुआ। दो गीदड़ मेरे पीछे-पीछे चल रहे थे। मैं स्वयं उस वृद्ध पुरूष के साथ चलने लगा तथा 'काठी-दरवाजा' पहुँचा। उसी समय जेलर ने तीन बजने की घण्टी बजाई। ब्रह्म महूर्त होने वाला था। उस वृद्ध को आगे पीछे देखने की चेष्टा की, परन्तु वह अदृश्य हो गया था। तत्पश्चात् सीढ़ियों पर आया, जब तक कि लोग प्रातः होते ही आने-जाने लगे। घर जाकर माता से पूछा उसने कहा,"मैने तुझे पुकारा ही नहीं था"। इसी प्रकार मेरी

B. A. (Double Course) की परीक्षा सोमवार को थी। मैं शनिवार के सांयकाल में ही श्रीचक्रेश्वर के भजन के लिए चला गया, जब कि पढ़ाई का 'रिविजन' करना अत्यावश्यक था। प्रातः आते ही नींद से आँख खुली। 'मनोचा गाईड' लाया, कुछ विशेष प्रश्नों पर जोर दिया। जब परीक्षा हॉल में गया वही ग्यारह प्रश्न पेपर में सोल्व करने के लिए आये हुए थे। ऐसे बहुत से अनुभव हुए हैं!

इस पवित्र श्रीचक्रेश्वर में पण्डित कृष्णजू कार, ऋषि पीर साहिब, भगवान गोपीनाथ जी ने अपने तपस् से परम सिद्धि प्राप्त की है। माता शारिका के प्रेम ने मुझे बाधित किया, कि डॉ चमन लाल रैना से निवेदन करूँ कि ऐसी पुस्तक जिस में माता शारिका के अठारह श्लोक–श्री शारिका 'पातुनः', 'गौरीदशकम्' एवं खड्गमाला आदि का सम्पादन एवं व्याख्या की जाए। यह मेरी प्रेम की आहुति शारिका माता के प्रति समर्पित हो!

डॉ. चमन लाल रैना शाक्तदर्शन के विद्वान हैं। एक महानुभाव हैं। शाक्त दर्शन निरूपणम् पर कई पुस्तकें लिखी हैं। बहुत ही शान्त स्वभाव के हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती जया सिबू है, जिन्होने मांत्रिक भजन दीपिका बीज मन्त्रों पर आधारित व्याख्या लिखी है। मेरे अनुरोध पर उनके दो भजनात्मक भाव, श्री शारिका एवं चक्रेश्वर पर प्रकाशित किए जा रहे है। पण्डित जगन्नाथ सिबू जी ने कश्मीर शाक्त विमर्श लिखकर ख्याति प्राप्त की तथा बहुत ही अनुभवी थे। उनकी पुस्तक से प्रेरित हो कर डॉ. चमन लाल रैना ने इस शब्द यज्ञ का श्री गणेश किया। अब मै जीवन के संध्या काल में वृक्ष के पत्ते की भांति हूँ। अतः अपनी श्रीचक्रेश्वर से सम्बंधित समृतियों को संजोये हुए इस पुस्तक को प्रकाशित करने से अपने आप को सौभाग्य युक्त समझता हूँ। पण्डित चमनलाल रैना जी ने मेरे सपने को इस पुस्तक के सम्पादन तथा व्याख्या से मुझे अनुग्रहित किया। अन्ततः पंचस्तवी के इस श्लोक से समाप्त करता हूँ:

विद्यां परां कतिचिद् अम्बरं-अम्भ
केचिद् आनन्दमेव कतिचित्-कतिचित् च मायां।।
त्वां निष्कलाहुरा परे वयमां अनाम
साक्षात् अपार करुणां गुरूः मूर्तिमेव।

इति शुभं सर्वत्र भवेत्।

-अर्जुन देव व्यशन

Shri Chakreshvara Stutih

श्री चक्रेश्वर स्तुतिः

(PRIYA BINDU TARPANA-PARÂ)

प्रिय बिन्दु तर्पण परा

श्री यंत्र

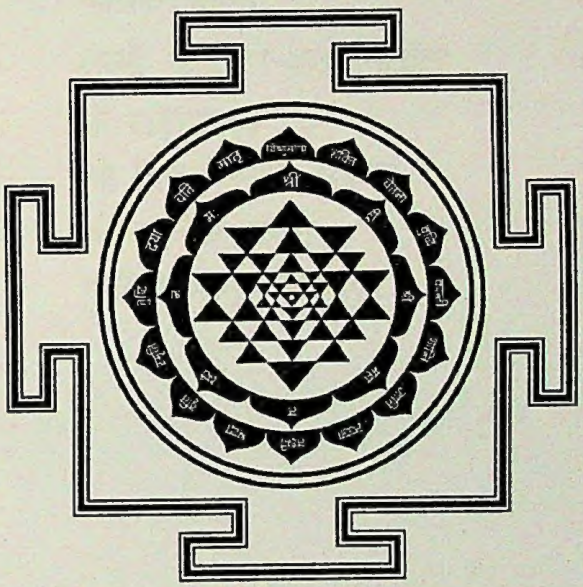

ॐ श्री चक्रेश्वराय तर्पणपराय नमः

Edited, Translated and Annotated by:

Dr. Chaman Lal Raina

Published by

A. D. Veshin

B.A. (Double Course) की परीक्षा सोमवार को थी। मैं शनिवार के सांयकाल में ही श्रीचक्रेश्वर के भजन के लिए चला गया, जब कि पढ़ाई का 'रिविजन' करना अत्यावश्यक था। प्रातः आते ही नींद से आँख खुली। 'मनोचा गाईड' लाया, कुछ विशेष प्रश्नों पर जोर दिया। जब परीक्षा हॉल में गया वही ग्यारह प्रश्न पेपर में सोल्व करने के लिए आये हुए थे। ऐसे बहुत से अनुभव हुए हैं!

इस पवित्र श्रीचक्रेश्वर में पण्डित कृष्णजू कार, ऋषि पीर साहिब, भगवान गोपीनाथ जी ने अपने तपस् से परम सिद्धि प्राप्त की है। माता शारिका के प्रेम ने मुझे बाधित किया, कि डॉ चमन लाल रैना से निवेदन करूँ कि ऐसी पुस्तक जिस में माता शारिका के अठारह श्लोक-श्री शारिका 'पातुनः', 'गौरीदशकम्' एवं खड्गमाला आदि का सम्पादन एवं व्याख्या की जाए। यह मेरी प्रेम की आहुति शारिका माता के प्रति समर्पित हो!

डॉ. चमन लाल रैना शाक्तदर्शन के विद्वान हैं। एक महानुभाव हैं। शाक्त दर्शन निरूपणम् पर कई पुस्तकें लिखी हैं। बहुत ही शान्त स्वभाव के हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती जया सिबू है, जिन्होने मांत्रिक भजन दीपिका बीज मन्त्रों पर आधारित व्याख्या लिखी है। मेरे अनुरोध पर उनके दो भजनात्मक भाव, श्री शारिका एवं चक्रेश्वर पर प्रकाशित किए जा रहे है। पण्डित जगन्नाथ सिबू जी ने कश्मीर शाक्त विमर्श लिखकर ख्याति प्राप्त की तथा बहुत ही अनुभवी थे। उनकी पुस्तक से प्रेरित हो कर डॉ. चमन लाल रैना ने इस शब्द यज्ञ का श्री गणेश किया। अब मै जीवन के संध्या काल में वृक्ष के पत्ते की भांति हूँ। अतः अपनी श्रीचक्रेश्वर से सम्बंधित समृतियों को संजोये हुए इस पुस्तक को प्रकाशित करने से अपने आप को सौभाग्य युक्त समझता हूँ। पण्डित चमनलाल रैना जी ने मेरे सपने को इस पुस्तक के सम्पादन तथा व्याख्या से मुझे अनुग्रहित किया। अन्ततः पंचस्तवी के इस श्लोक से समाप्त करता हूँः

विद्यां परां कतिचिद् अम्बरं-अम्भ
केचिद् आनन्दमेव कतिचित्-कतिचित् च मायां।।
त्वां विश्वमाहुरा परे वयमां अनाम
साक्षात्-अपार करुणां गुरूः मूर्तिमेव।

इति शुभं सर्वत्र भवेत्।

-अर्जुन देव व्यशन

Shri Chakreshvara Stutih

श्री चक्रेश्वर स्तुतिः

(PRIYA BINDU TARPANA-PARÂ)

प्रिय बिन्दु तर्पण परा

श्री यंत्र

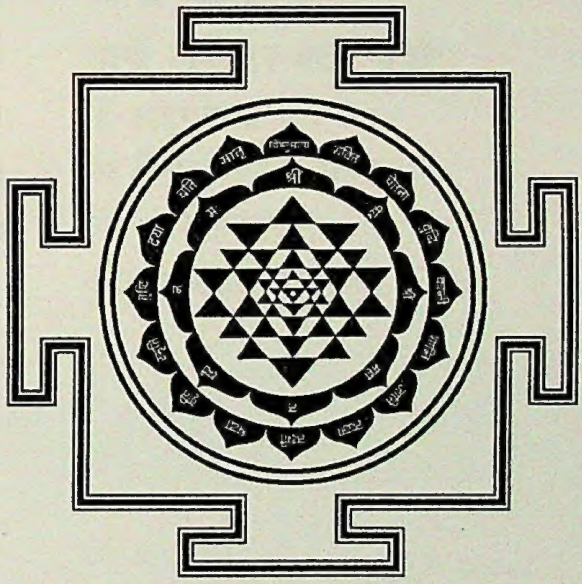

ॐ श्री चक्रेश्वराय तर्पणपराय नमः

Edited, Translated and Annotated by:

Dr. Chaman Lal Raina

Published by

A. D. Veshin

INDEX

1.	शुभांशसा	iv
2.	पुरोवाक्	1
3.	Introduction	5
4.	श्री राजराजेश्वरी स्तुतिः	9
5.	श्रीचक्र-महिमा	40
6.	लक्ष्मी अष्टोत्तर-शत्नामावलिः	61
7.	ऊँ खड्गमाला	76
8.	श्री त्रिपुर सुन्दरी स्तोत्रम	84
9.	श्री शारिका भजन	88
10.	दुर्गा-द्वात्रिंशत्-नाममाला	91

U.G.C. CENTRE OF ADVANCED STUDY (CAS)

Dr. Rajendra Prasad Sharma
Co-ordinator CAS (II) &
Director, Centre for Gandhian Studies

DEPARTMENT OF PHILOSOPHY
(CAS Building)
University of Rajasthan, Jaipur-302004 (India)

शुभांशसा

परम सौभाग्य का विषय है, कि कश्मीर शैवदर्शन के गम्भीर मनीषी डॉ. चमन लाल रैना जी ने 'प्रिय बिन्दु तर्पण परा' श्री राजराजेश्वरी स्तुतिः, न्यास आदि का अंग्रेजी में अनुवाद प्रस्तुत कर साधकों के हित का संवर्धन किया है। साथ में आद्य शंकराचार्य कृत 'गौरी दशकम्' का अंग्रज़ी रूपान्तर किया है। ग्रन्थ का पुरोवाक् अंग्रेजी तथा हिन्दी में प्रस्तुत किया है। परिशिष्ठ में 'खड्गमाला' का सुन्दर सम्पादन किया है। यह ग्रन्थ 'संगत' नोइडा- एन. सी. आर. के द्वारा प्रकाशित हो रहा है।

आज हमारी परम्परा के आगमिक ग्रन्थों के रहस्य को प्रकट करने वाले कतिपय विशिष्ट विद्वान इस धरा पर शेष है। इनमें डॉ. चमन लाल रैना तंत्र एवं कश्मीर परम्परा के विश्रुत एंव बहुश्रुत आचार्य हैं। इस सारस्वत यज्ञ में पूर्णाहुति पर मैं इन्हे शतशः प्रणाम एवं सादर अभिनन्दन कर रहा हूँ।

१५ अगस्त, २०२०
स्वतंत्रता दिवस

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
पूर्व समन्वयक

पुरोवाक्

ॐ नमो भवान्यै श्री चक्रेश्वराय नमः ॐ
ओं छन्दः पादयुगा निरूक्तसुमुखा शिक्षा च जङ्गायुगा
ऋग्वेदोर्युगा यजुःसुजघना या सामवेदोदरा।
तर्कन्याय कुचा श्रतिस्मृतियुक् काव्यादिवेइनना
वेदन्तामृतलोचना भगवती श्री राजराजेश्वरी ।।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी,
मातंगी विजया जया भगवती, देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना, वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी, माता कुमारी-त्यसि।।

– लघुस्तवः१८

शान्ति पाठ

ऊँ शं नो मित्रः। शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा।
शं नो इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरूक्रमः।
नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामावेत्, तद्वक्तारमवेत्, आवेत् माम्, अवेत् वक्तारम्।

(ऋग्वेद का मन्त्र)

ऊँ यानि कानि च पापनि, ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे पदे।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
सर्वं वै पूर्णमस्तु।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

'स्वमाया' से निर्मित सृष्टि, श्री चक्रेश्वरी त्रिपुर स्वरूपिणी दिव्य आभा से युक्त स्वतंत्र शक्ति होकर, 'कुण्डलिनी' मे वास करती है। यही शक्ति मुलाधार में स्थित होकर षटचक्रों का भेदन करके सहस्त्रार में अवस्थित होती है। इस भेदन शक्ति का नाम त्रिक दर्शन के आधार पर 'क्रिया' शक्ति है। यह क्रिया स्वतः सिद्ध श्वासोच्छवास के क्रम से क्रियान्वित होती है। इस में जो रस का आस्वादन होता है, वही 'मधुमती' अर्थात् शक्ति का भास करा लेती है।

आनन्द से गर्भित 'काली' अपने सर्वस्व काल रूप में अर्थात् वर्तमान, भूत, भविष्य में प्रवृत्त है।

काली के काल तत्त्व से कला तत्त्व में प्रवृत्त होकर चक्रेश्वरी 'कला चक्र' से अवरोहण का मार्ग प्रशस्त करती है। 'मालिनी' के उद्घोष स्वरूप आकार 'नफकोटी' की वर्णमाला, अपने स्पंदन से चक्रेश्वर के कर्णों में अपना वास बना देते हैं।

शक्ति स्पन्दन से आविभूर्त होकर आर्ष-शक्ति के द्वारा मतंग मुनि से पूजित 'मातंगी' का स्वर्णिम-सौम्य स्वरूप योगानुष्ठान को सिद्ध करती है।

'विजया' रूप से आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त कर 'विजयेश्वरी' शक्तिपीठ पर आसीन होकर 'जया' शक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। जया, प्रकाश और विमर्श का केवल सार-तत्त्व है।

प्रकाश की अर्न्तमुख धारा में प्रस्तावित होती हुई सुव्यवस्थित रूप से 'देवी' का दिव्य-स्वरूप धारण करती हुई सहस्रनामों से समाहित 'श्रीशारिका' का कवच धारण करती है। वही शक्ति'शिवा' शंकरवल्लभा 'सौम्य-ज्योतिः स्वरूपा' दिव्य जगत् को अपना परा प्रकृति के प्रारूप से सँवारती है, अतः चक्रेश्वरी का नाम 'शिवा' कल्याणमयी माता भवानी है।

शिवा के प्रसन्न होने से 'शाम्भवी' अवस्था का साक्षात्कार हो सकता है। शाम्भवी अवस्था में स्वयमेव आनन्द स्फुर्ति का बोध होता है। इस आत्मा में सभी तत्त्व 'आत्मसात' होते है। शक्ति एवं शिव की आभा विभासित होकर 'आगम शास्त्रों' में प्रस्फुटित होती है।

वही एकैव 'शक्तिः' परमेश्वरस्य, शिव-शक्ति-एक-रूपिणी नाम से पूजित है। शंकरवल्लभा, इस शब्द नाद से उद्घोषित देवी, भैरव के साथ रमण करने वाली भैरवी कहलाती है। श्री राज्ञी देवी के स्वरूप में भूतेश्वर से, शारिका के रूप में शंकर, त्रिपुरसुन्दरी के रूप में राजराजेश्वर, ज्येष्ठा के रूप में ज्येष्ठेष्वर की वल्लभा होकर देवकार्य में लग्न होकर दैत्यों का शमन करती है। वही देवी 'त्रिनयना'- सोम, सूर्य, अग्नि को अपने आप में संजोये त्रिकाग्नि स्वरूप बनकर सृष्टि, स्थिति, संसार रचा कर बिन्दु से त्रिकोण में वास करती है।

महेश्वर सूत्रों में 'अ इ उ' की त्रिपुटिका को धारण करने वाली, वाग्वादिनी श्री शारदा के 'ऐं-क्लीं-सौः' बीज मत्रों से त्रिपुर सुन्दरी, त्रिपुरेक्षी, त्रिनयना, त्रिब्रह्म, वर्ण-त्रयः को प्रतिपादित करती है। भैरवी के रूप में सर्वभद्रपदा शक्ति भैरवी जगत् के कल्याण के लिए भैरवी से संवाद करती हुई सहस्रनामों का सृजन करती है, वही ह्रींकारी बीज़ स्वरूपा 'सप्त मातृकाओं' की जननी है। यह वास्तव में लज्जा बीज़ है। त्रिपुरा नाम से त्रिपुरसुन्दरी की

सौम्यावस्था ही परा तथा अपरा दोनो में समाहित होकर ६४ कलाओं को सुशोभित करने वाली माता होकर भी अयोनिजा कुमारी, नवदुर्गा से पूजित है।

श्री चक्रश्वर स्वरूप दर्शनम् रसो वै सः।
रसं हि-एव अयं (ह्येवायं) आनन्दी भवती।।

--तैतिरीय उपनिषद्

श्रीचक्रेश्वर के समक्ष बैठने में जो आनन्द की अनुभूति होती है, वही आध्यत्मिक रस है। रस की अनुभूति किसी भी आध्यात्मिक दृश्य को देखकर साधक अपने शरीर मे स्वयं ही श्रीचक्रेश्वर से स्पन्दित होता है।

सैव (सा-एव) स्वयं वेत्ति तस्या नान्योऽस्ति वेदिता।

वही 'पराशक्ति चक्रेश्वर रूपेण सुशोभिता अस्ति' के आधार पर स्वयं ही अपने आप को जानती है

अतः प्रपंचसार के आधार पर देवी अणु से भी अणु तथा चराचर को व्याप्त करके अवस्थित है।

सा च माया परे तत्त्वे संवित् रूपेऽस्ति सर्वदा।
ततो माया-विशिष्ठां तां संविदं परमेश्वरीम्।
मायेश्चरीं भगवतीं सच्चिदानन्द-रूपिणीम्।
ध्यायेत् तथा-राधयेत् वा प्रणमेत् च जपेदणि।।

श्री शारिका माया तत्त्व से परे, केवल संवित् स्वरूप सें ही स्वनिर्मित श्रीचक्र में ही वास करती है।

चक्रेश्वर- श्रीचक्र की परिक्रमा श्रीगणेश से आरम्भ होते हुए श्री ज्वालाशिला, सप्तर्षि शिला, श्री कालिका शिला, स्वयंभू श्री चक्रेश्वर की 'पातुनः' सर्वेश्वरी देवी है।'

Prologue

Shakti is a Sanskrit word. According to the Sanskrit Vyakarna शक् is the Dhatu or root,—क्तिन् Ktin is the प्रत्यय Pratyaya which gives a definite meaning to the root शक् as Divine Mother. She is the Chakreshwara, in the Context of the Sharika-Devi. Shakti is one of the names of the Divine Mother, popularly revered as Shri Durga. The attribute of Shakti to the Divine Mother was uttered by the Devatas, after killing the Mahishasura, as under:

या देवी सर्व भूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

This secret was revealed by the Rishi Medha to the Raja Suratha and Samadhi Vaishya, during their initiation, in his Ashrama. Later, the term Shakti was explained as the second Tattva, in the Trika Darshana. Hence, evolved the Devi Nâma Vilâsa and other Agama Shastras.

या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

This is 'Bija' of 'Shakti', at Chakreshwara. The Ashta Bhairavas of Kashmir are said to be having their abode around the sacred Chakreshvara at Sharika Parvat, popularly known as the Hari Barbat. Hari Parbat is the hillock, said to be thrown as a pebble in the Satisar—the sacred lake of Lord Shiva's Eternal Shakti, by Sati

Herself, who took the form of Shârika—'Ha'ir' in the Kashmiri dialect.The whole description is described in the One Thousand Names of Shri Shârika, revered as the Shârika Sahsranâma. All the Bijâksharas— seed syllables are adored as the 'Mâtrika' forms of the Divine Mother. Shri Chakreshvara— the king of all the Chakras, is with Fifteen Bijaksharas of the 'Kâdi Vidya', and also is revarded as the "Nafakoti Samavesha" of the Mâlini-Yijayottara Tantra.

The concept of Kashmiri word Bhairava has its deep roots in the Trika philosophy—Agama Shastras, Pratyabijnya Shastra and the Spanda Shastra. Bhairava is the explanation of the term Shiva, who is the ultimate Reality of this immanent world and transcendental understanding/reality.

The Sanskrit Varna alphabet भ--"Bha" stands for Bharana, which means to 'bear' anything within, or 'Barun' in Kashmiri language; र--'Ra' "Ravan" means to cry, to roar and the Kashmiri word 'Râwun', seems to be the 'Tadbhava' of word "Râvan". व--"Vaman" means to vomit or "Womun" in Kashmiri.These three characters form the word Bhairava, but these are just the linguistic pattern of the word Bhiarava as said in the 'तंत्रालोक' Tantraloka. Essentially, it is the nature of Shiva, who creates, sustains and dissolves the manifestation in His own being, at the time of Pralaya/final dissolution.

When some type of Puja is offered in the Kashmiri Pandit religious ethos, the followers offer Naivedya/Prasadam to the Ishta Devata and the Ishta Bhairava, the guardian deity of the area. These are:—

1 Anadeshvara Bhairava, 2 Tushkarâja Bhairava, 3 Mangaleshvara Bhairava, 4 Pooranrâja Bhairava, 5 Bahukhatkeshvara Bhairava, 6 Hatkeshvara Bhairava, 7 Vetâlraja Bhairava and 8 Jayaksena Bhairva. Sheetal Nath Bhairava, is said to be the Upa-Bhairwa of the Anandishvara Bhairava.

Nandakeshavara is the seeker in the Bhavâni Sahsranâma, who wants to know the quintessentials behind Bhavâni— the Creativity of the Divine Motherhood. Shri Shârikâ Sahsranâma, Jwâla Sahsranâma and Râginya Sahsranâma also deal with the quintessence of the Mahâmâya—Moola Prakriti, being the focus of the Bhairava. Bhairava & Bhairavi are complementary to each other. Bhairava is the name for Shiva, who according to Abhinavgupta is possessed with the 'Bheeshana Shakti', which is Shakti, in the most exalted form. While entering the Cave of Self Realization with the Ultimate Shiva, he assumed the Parma Shiva Tatvâ.The Cave is at Bheerva, the name is Bheeru—Bhairava, which means terrific, formidable, dreadful, horrible, frightening. All these attributes are to destroy the Asuri Shakti within, during the Trika Sâdhanâ.

We need to apply our presence of mind, through Vimarsha Shakti, to overcome any untoward situation, or we are on the wrong path, to identify the Self as body alone, and not the 36 Tattvas. This is said in the Parâ—Prâveshika, authored by Kshemraja, a jouney to consciousness from the Prithvi Tattva to the Ultimate Shiva Tattva. We invoke the 'Iha Rashtradhi-Pati', the guardian Deity, as Ananadishvara Bhairava and other Bhairavas to get the innate Shakti transformed into Kriya Shakti, to get Shakti within the soul and to be ready for transformation.

Ajmer
Shrâvana Purnima

C. L. Raina

श्री राज राजेश्वरी स्तुतिः

ॐ नमो भवान्यै

ॐ छन्दः पादयुगा निरूक्त सुमुखा शिक्षा च जंघा युगा
ऋग्वेदोरू युगा युजुः सुजघना या सामवेदो दरा।
तर्क न्याय कुचा श्रुति स्मृति युक् काव्यादि वेदानना
वेदान्तामृत लोचना भगवती श्रीराज राजेश्वरी।। १।।

श्री राजराजेश्वरी, श्री चक्ररुपिणी चक्रेश्वरी के युगलपाद वेदों में वर्णित छन्द शास्त्र हैं। निरुक्त-वैदिक शब्द व्युत्पत्ति, शिक्षा-शब्द उच्चारण एवं काव्याभ्यास, उसकी दो जाँघें हैं। ऋग्वेद उसके उरु हैं, यजुर्वेद सुशोभित जंघा है, सामवेद उदर है। तर्क तथा न्याय शास्त्र कुचा एवं वक्षस्थल हैं। श्रुति और स्मृति युक् अर्थात् अस्थि संधि हैं। काव्यादि वेद रुपी मुख हैं। वेदान्त अमृतमयी नेत्र हैं। ऐसी ही भगवती परा शक्ति राज राजेश्वरी का प्रिय बिन्दु स्वरूप है। ।।१।।

The Priya Bindu—Primal dot being the nucleus of the Vimarsha Shakti is within Shri Raja Rajeshvari. It is the Parâ/ transcendental nature of the Divine Shakti visualized in the sacred Shri Chakra at Chakreshwara. In its immanent nature, the Chhandas/

Vedic meters are the two feet. The Vedic Vyâkaran/ grammar known as the Nirukta is the beautiful face. The Shiksha/pattern of imparting Divine knowledge are Her two legs. The Rigveda are the two breasts for making devotee immortal. The Yajurveda is Her hips. The Sâmaveda is Her belly. The Tarka/logic Shâstra and Nyâya/polity Shâstra are respectively Her two milky stores, within Her breast making a devotee capable of understanding the Shri Chakra. Shruti, Smriti and poetics are His speech organs within face. The Vedânta is Her vision/seeing power—the two eyes. She is such a beautiful Mother in the Name and form of Shri Râja Râjeshvari, where the Vedas and Agamas are the complementary paths to understand Shri Chakra.

Shloka No 2

क - कल्याणा युत पूर्ण-बिम्बि-वदना पूर्णेश्वरी नन्दिनी।
पूर्णा पूर्णतरा परेश महिषी पूर्णामृता स्वादिनी।।
सम्पूर्णा परमोत्तमामृत कला विद्यावती भारती।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।२।।

क - कल्याण देने वाली-(सूर्य चन्द्रमा से युक्त गोलाकार) मुख वाली, पूर्णेश्वरी, नन्दनवन जैसे दिखने वाली, पूर्णिमा की भांति तथा पूर्णता से जो कुछ भी है, ऐसी परमेश्वरी, पूर्ण अमृत देने वाली चक्रेश्वरी सम्पूर्ण है। परमा-अमृतकला से आवृत अमृत देने वाली चक्रेश्वरी विद्यावती सरस्वती

शारदे! श्री राज राजेश्वरी! श्री चक्र के मध्य में उल्लसित शक्ति प्रिय बिन्दु की परा पूजा में ही वास तर्पण-परा करती है।।२।।

O Divine Mother! Your gracious face is filled with all compassion, and with beautiful propitiating looks. You are complete in all respects, so you are adored as Poorneshvari-the Mother of all manifestation. You are the all comforting one. You transcend, what is understood as complete and whole, thus you are unfathomable. You are the spiritual consort of Parma Shiva, so you are revered as the "Paresha Mahishi". While meditating upon your Chakra, you help us tasting your Amrita—necteraine of life. We adore your Shri Chakra, which is all in One. This Chakra is the Supreme sovereign, filled with all the bliss of Amrita. You are known as the Mother of speech as Bhârati, and all what are revered as the Vedic Shrutis. Shri Chakra is to be meditated upon in the center, where lies its nucleous as being the Priya Bindu. That Bindu transcends all the three stages of the Time consciousness, which is Parâ state.

Shloka No 3

ए - एका-कारमनेक वर्ण विविधा-कारैक चिद्रूपिणी
चैतन्या-त्मक एक चक्र रचिता चक्रांग-एकाकिनी।।
भवाभाव विभाविनी भय हरा सद्भक्त चिन्ता मणिः

श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।३।।

ए - ए से अनेक वर्णों में भी एकाकार हो। विविध आकारों में भी चिद्स्वरूपिणी शक्ति हो। चैतन्य स्वरूपा हो, एक चक्र में तेरा 'निलयम्' है। नव चक्र में भी एक ही हो। अकेला-'ऐकमेव' तुम्हारा आभास है। भय को दूर करने वाली अभयवर प्रदा हो, तथा सद्भक्तों के लिए चिन्तामणि रूपी श्रेयस्कर विभूति हो। श्रीचक्र के मध्य में उल्लसित प्रियबिन्दु में ही परा शक्ति का वास है।।३।।

The Divine Mother, who appears in the Shri Chakra is "Ekâkâr"—that suggests the unity of Shiva and Shakti, but she assumes multi-hues, shades and vibrations. Essentially, She is "Eka Chit-Roopini"/ the unified consciousness. Thus, You are revered as being the Supreme Atman/self of all. Though there are Nine Chakras in the Shri Chakra, at Chakreshwara, yet there is One and only one Chakra, among all the Chakras, which is revered as the Chakreshvara/ Sovereign of the Chakra. You abide in Bhâva/ emotion of the Mother, but for the Yogis you are 'Abhâva'—devoid of any emotion, and for a devotee, you descend as the 'Vibhâva'— the favourite relationship between mother and the child. Thus your children, do not get deluded, and become free of any anxiety, dread, pain and suffering. You are like the 'Chintamani'—a fabulous gem, giving of all desires,

to its possessor—a true Devotee, who understands the limitation of ego.

Shri Ckakra is to be meditated upon in the center, where lies its nucleous as being the Priya Bindu. That Bindu transcends all the three stages of the Time consciousness, which is parâ state.

Shloka No 4

ई - **ईशाधीश्वर योगि वृन्द विधृता स्वानन्द-भूता परा पश्यन्तीत्यनु मध्यमा विलसती श्रीवैखरी रूपिणी। आत्मानात्म-विचारिणी त्रिनयना विद्याावती भारती श्रीचक्र प्रियबिन्दु तर्पणपरा श्रीराज राजेश्वरी।।४।।**

ई - योगियों में चिन्मयभाव से आनन्द प्रदान करने वाली हो, परा, पश्यन्ती, मध्यमा एवं वैखरी रूपिणी, 'श्रीवाक्' की अभिव्यक्ति हो। ईशाधीश्वर भी भवचक्ररूप में स्थिर हैं। आत्मभाव से ही जीवात्मा में वास करने वाली त्रिनयना- सूर्य, अग्नि स्वरूपा नयनों वाली, विद्यावती राजराजेश्वरी हो।

श्रीचक्र के मध्य में उल्लसित प्रिय बिन्दु में ही पराशक्ति का वास है।।४।।

The Bhakta/devotee and Jnâni/the man with absolute knowledge connect themselves with the Ishta/ chosen deity and Adhishwara / Absolute Divinity. Isha is the IshTa Deva and Adheeshwara is the Parama Shiva. Both the devotee and the Jnâni are intoxicated with the Sva—Ananda, the Ananda of being either in the service of IshTa or in the blissful Yoga. Parâ,

Pashyanti, Madhyamâ and Vaikhari are the Four different modes of the Divine Mother realised through trascendence, perception, in between being and becoming and through the Uttering Shabda/Nâd/Vâk-, and that is Vaikhari—the articulate utterances. Through these modalities, a devotee becomes engrossed in your Chakreshvara, and sees in you the 'Three' eyes of Svâhâ/ Fire, Svadhâ/Lunar, and Vashatkâra/Solar system. Thus the devotee calls you with the name of Vidyâwati Bhârati.This is your Saraswati aspect.

Shri Ckakra is to be meditated upon in the center, where lies its nucleous as being the Priya Bindu. That Bindu transcends all the three stages of the Time consciousness, which is Parâ state.

Shloka No 5

ल - लक्ष्या लक्ष्य निरीक्षणा निरुपमा रुद्राक्ष माला धरा।
साक्षत्कारण दक्ष वंश कलिता दीर्घाति-दीर्घेश्वरी।।
भद्रा भद्र वर प्रदा भगवती भद्रेश्वरी भद्र दा।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।५।।

ल - तुम तो लक्ष्य-ध्येय हो! सर्वत्र तुम्हारा ही निरीरक्षण है, अतः अलक्ष्या कहलाती हो। निरुपमा होने के कारण तुम्हारी उपमा हो ही नहीं सकती। सदैव रूद्राक्ष माला धारण करती हो। दक्ष के वंश में जन्मी सती तुम ही हो। दीर्घाति दीर्घ गति तक तुम्हारा ध्वन्यात्मक शब्द-शरीर है। भद्र-पीठ पर आसीन, वरदा भगवती, भद्रेश्वरी होकर भद्र-कल्याण प्रदान करने वाली देवी!

तुम्हारा वास श्री चक्र के मध्य में आसीन है, जो सब प्रकार से भद्रपदा है, वही राजराजेश्वरी परा शक्ति हो।।५।।

The Divine Mother, whose abode is in the Chakreshwara is both visible and invisible. She is holding the Rudrakshamâlâ, and Her excellence is beyond comprehension. She is the Sâkshât kârana/ efficient cause of this manifestation, as She took birth in the clan of Daksha Prajapati. She bloomed there and became Kalitâ—to become the SATI, and extended herself in that great cosmic Yogâgni. She became the cause of all boons to the Nandi and Bringi —the Rudra ganas, and cause of curse to Her father –the Dakshaprajapati. But for a devotee, She is always known as Badradâ, and Bhadreshwari—the Mother of all progress, beautitude and benign looks.

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations/ offering of water by the devotee, which is Parâ state of the true consciousness.—

Shloka No 6

ह्रीं - ह्रींबीजानल नाद बिन्दु भरिता ओंकार नादात्मिका।
ब्रह्मानन्द घनोदरी गुणवती ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा।।
इच्छा-ज्ञान-क्रियावती जितवती गन्धर्व सं सेविता।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राज राजेश्वरी।।६।।

ह्रीं - ह्रीं बीजाक्षर जो लज्जाबीज से समादृत है, वही अग्नि स्वरूप नाद-बिन्दु है। सत्कार-सदरूपी ओंकार तथा नादात्मिका रूपी ब्रह्मानन्द में लीन, मेघों से आच्छादित त्रिगुण त्रिगुणमयी-सत्त्व रजस् तमस् से पूर्ण ज्ञान की देवी शारिका-वर्णात्मिका तुम ही हो। ज्ञानेश्वरी ज्ञानमयी देवी—इच्छा, ज्ञान, क्रिया से पूरित हो तथा जितवती हो; गंधर्वों से सुसेवित भी हो।

श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्री राजराजेश्वरी पराशक्ति हो।।६।।

'Hreem' is the Agni Bija. This seed-syllable is but the outburst of 'Fire' within the Bindu of the Chakreshwara. It is verily, the Satkâr/invocation to the Divine Mother through Her own Primal sound, which is OM. It is the very essence of each and every Nâda/sound revealed, and heard by the Rishis. It gives the vibrations of Bliss, which is but the very self of the Upanishadic Brahman.This 'Nâda' is filled with all the charged clouds, which is responsible for maintaining the Prakriti in harmony and regulated cosmic motion. It is understood through the blessings of Mâta Saraswati, the giver of Eternal Jnâna, as she is revered as the Gyâneshvari—the Mother of all knowledge and wisdom and Gyândâ—the giver of the Upanishadic knowledge. The Primal triangle is but the combination of Iccha/will power, Gyân—the

power of Divine Knowledge and Kriyâ/ the will to act of equal magnitude.

Shri Chakra is to be meditated upon the dearest Bindu, beyond all the immanent thoughts.The same Bindu is the abiding place of Shri Raj Rajeshvari, as in the Parâ state.

Shloka No7

ह - **हर्षोन्मत्त सुवर्ण पात्रभरिता पार्श्वोन्नता घूर्णिता।**
हुँकार प्रिय शब्द ब्रह्म निरता स्वारस्वतो ल्लासिनी।।
सारासार विचार चारुचरिता वर्णाश्रमा कारिणी।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।७।।

ह - हर्ष से उन्मत्त होकर सुवर्ण (सोने) के पात्र-हिरण्य गर्भ में तेरा भरण होता रहता है। पास (समीप) में उन्नत होकर अर्थात् विशाल काय होकर हुंकार करती हुई समष्टि को हिलाती हो। शब्द ब्रह्म का प्रिय ऊँ कार नाद करती हुई सारस्वत शब्द 'ऐं क्लीं सौः' का उल्लास भारती हो। 'सारभूत' तत्त्व एवं 'असार' रूप अंधकार एवं मोहमाया का विचार चरितार्थ करके वर्णाश्रम का विधान बनाती हो।

तुम ही श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्री राजराजेश्वरी पराशक्ति हो।।७।।

He who adores the Basic/primary Trikona/ triangle, after the Bindu is attuned with the Gandharva Veda—the science of music within Bhâva- Râga- Tâla. She is also adored as the Jitawat/ the mother of all victory,

as She is adored by the Yogis, who have attained the Jeewana Mukhta state of consciousness. You do create the sound, where in 'Hum', that becomes the 'Sârswata' Bija Mantra. You create the 'Varnas', on the Boris of actions. Your pitcher is always filled with the gold, which is 'Hirnya-Garbha'.

Shri Chakra is to be meditated upon the dearest Bindu, beyond all the immanent thoughts.The same Bindu is the abiding place of Shri Raj Rajeshvari, as in the Parâ state.

Shloka No 8

स - सर्वज्ञान कलावती स करुणा सन्नादिनी नन्दिनी।
सर्वान्तर्गत शालिनी शिव तनू सन्दीपिणी दीपिनी
संयोग-प्रियरूपिणी प्रिय वती प्रीता प्रतापोन्नता।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।८।।

स - सर्व ज्ञान, सम्पूर्ण कलाओं से युक्त होकर करुणामयी देवी सत् नाद (सन्नाद) रूपिणी कामधेनु नन्दिनी हो। सभी के अन्तःकरण में स्थित् शालिनी हो। शिव की कोमलांगी शिवा हो। ज्वलन शील-संदीपिणी दीपिका हो। प्रिय स्वामिणी प्रीता, प्रताप-शैर्य से उन्नत हो, तो तुम ही इनका समन्वित रूप भी हो।

श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्री राजराजेश्वरी पराशक्ति हो।।८।।

O Supreme Mother, You are the abode of all the Vedic knowledge, and all the applied knowledge—like

aesthetics, music, art, and poetics. You are the source of all compassion. You are the vibrations of the phonemes of the Vedic Varnamaala. You are adored as the Nandini—born for gracing the Nandana Vana of the Higher regions. You are in the inner recesses of the heart of the devotees. You are complimentary to Lord Shiva, where in, You radiate the whole universe with your brilliance. You are what is known as the 'Samyoga' or the Divine hour designated by Lord Brahma. You are all endearing, and you get emotionally charged with the higher bliss of Mâtri- Tattva.
You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcendends all the desires of duality, thus adored as the Shri Raja Rajeshwari, as in the Parâ state.

Shloka No 9

क - कर्माकर्म विवर्जिता कुलवती कर्म प्रदा कौलिनी।
कारूण्या वधि सर्व कर्म सिन्धु प्रिया शालिनी।।
पूर्ण ब्रह्म सनातनान्तर गता ज्ञेया स्वयोगात्मिका।
श्रीचक्र बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।९।।

क - कर्म तथा अकर्म का त्याग करके 'कुलाचार' कौलिनी में तल्लीन होकर करुणा की मूर्ति हो। निरत स्वर से आवृत होकर सिन्धु सरिता स्वामिणी प्रिय स्वभाववाली जननी हो सनातन, शाश्वत, अनन्त, निरन्तर प्रवाहित योगिनी स्वरूपा ज्ञान द्वारा जानी हुई, स्व-योगात्मिका हो।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्री राजराजेश्वरी परा शक्ति हो।।९।।

O Supreme Mother! You are devoid of all actions and inactions. You are adored as the Mother of the 'Kula' system of the Shakti tradition. But you are promoting the Law of Karma, which is the Karma yoga. Your looks are always filled with Karunaa/ compassion. You are within every step of Vedic Karma. You are very dear to the Sindhu—the oceanic body of the globe. You are adored as the Shâlini—the Mother of all humility and sensibility. You are the Eternal one. You abide in the Sanâtana Dharma. You are to be known as the Jneya—the Great and glorious Mother worth knowing for higher emancipation of life. You are always focused through any form of Yoga.

You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcends all the desires of duality, thus adored as the Shri Raja Rajeshwari, as in the Parâ state.

Shloka 10

ह - **हस्तिकुम्भ सदृक पयोधर वरा पीनो न्नता नम्रगा।**
हाराद्या भरणा सुरेन्द्र विनुता शृंगाट-पीठालया।।
योन्या कारक योनिमुद्रित-करा नित्यं सु वर्णात्मिका।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१०।।

ह - हंस्ति कुम्भ (हाथी के मस्तक का ललाट स्थल) के सदृश्य तुम्हारे पीनोन्नत (अति स्थूल) स्तन अमृत रूपी दूध को धारण करते हुए झुक जाते हैं। दिव्य हार आदि आभूषणों से पूजित हो। सुरेन्द्र-इन्द्र शृंगाटपीठ-पर्वत्तीय पीठालय में

विनम्र होकर भव्य रूप में तूझे पूजता है। योनि मुद्रा में योन्याकार द्वारा नित्य ही तुम्हारे सुशोभित वर्णात्मक भव्य स्वरूप का ध्यान भक्तजन करते हैं।

श्रीचक्र का उल्लसित प्रिय बिन्दु तृप्ति से प्राप्त राजराजेश्वरी परा प्रकृति हो।।१०।।

O Divine Mother! You are filled with the Divine ambrosia, just like the Mother Elephant to feed her off springs. You are adorned with the celestial necklace. Indra pays you obeisance at the Shringata Peettha. The devotees adore You as Devi, seeing your gracious Self in the Yoni Mudra. It also is your Varnâtmikâ form.

You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcendends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari, as in the Parâ state.

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations/ offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ! 10

Shloka 11

ल - लक्ष्मी लक्षण पूर्ण कुम्भ वरदा लीला विनोद स्थिता।
लाक्षा रंजित पद्मपाद युगला ब्रह्माण्ड सं सेविता।।
लोका लोकित लोक काम जयिनी लोका श्रयांका श्रया।

श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वारी।।११।।

ल - लक्ष्मी लक्ष्णा शब्द-शक्ति से युक्त पूर्ण कुम्भ रूपी देवी वरदा हो। लीला से युक्त विनोद आसीन होकर लाख से रंजित तुम्हारे दो पद्म पाद ब्रह्माण्ड को समाये हुए हैं। तीनों भुवनो- **भूः, भवः स्वः** को आलोकित करने वाली देवी, काम कला को अपने अधीनस्थ रखकर, त्रिलोकी को अपने आश्रय मे लेती हो। श्रीचक्र बिन्दु से तृप्ति प्राप्त राजराजेश्वरी परा प्रकृति हो।।११।।

O Mother Divinity! You are with 'Lakshanâ' Shabda Shakti. It is because of your cosmic play that You do move with your two feet, which are dyed with the Lac powder—red in substance.You make all the Lokas effulgent with your Ashraya, which is your graceful Motherly tendeness.

You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari,

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations/ offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ! 11

Shloka 12

ह्रीं - ह्रीं काराकिंत शंकर प्रिय तनुः श्री योग पीठेश्वरी।
मांग्ल्या-युत पंकजाभ नयना मांगल्य सिद्धिप्रदा।।

तारुण्या त्तप सार्चिता तरुणिका तन्त्रोप मातन्विता।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१२।।

ह्रीं - ह्रींकार से अंकित अर्थात् लज्जा बीज में गर्भित शंकर की प्रियतनु-अर्द्धांगिनी हो, श्रीयुक्त योग स्वरूपा हो। प्रद्युम्न पीठ (शारिका पर्वत) पर आसीन हो। मंगल मूर्ति, नेत्र कमल से कटाक्ष करती हुई, मंगल की ममतामयी देवी सिद्धिदात्री हो। तरुण आकृति वाली देवी, तपस्या की प्रतिमूर्ति, तन्त्रों से तन्वित/आवृत्त अथवा समाहित होना ही चैतन्य का आभास है। श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु, तर्पणपरा दूर्गा श्री राज राजेश्वरी परा शक्ति का स्वरूप हो।।१२।।

You are the carved as the Hreemkâra, which substantiates that you are Yogini par-excellence. You are Peettheshvari, the consort of Shiva. You are the Mangala Murti—the very auspiciousness. You are the Siddhadhâtri as well. You are very delicate within sublime form, doing your Tapasyâ—austeritries, blossomed with the Tantras.

You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcendends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari.

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations

/offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ! 12

Shloka 13

स - सर्वेशाङ्ग विहारिणी स करूणा सर्वेश्वरी सर्वगा।
सत्या सर्वमयी सहस्त्र दलगा सप्तावर्ण वोपस्थिता।।
सङ्गा सङ्ग विवर्जिता सुख करी बालार्क कोटि प्रभा।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१३।।

स - सर्वेश्वर-शिव के अंगों में विहार करती हुई, करुणा की ममता मयी जगत्-जननी सर्वेश्वरी नाम से समाहित हो। सर्वत्र तुम ही हो, सर्वत्र तेरा ही आभास है, अतः सर्वत्र 'साम गायन' द्वारा पूजी जाती हो। सत्य स्वरूपा जननी, सहस्त्रारके चक्र में स्थित होकर सप्त समुद्रों में ही तुम हो। संग एवं असंग (युक्ति एवं अयुक्ति) को लाँघ कर ही सम्पूर्ण सुख को देने वाली, बालार्क-अरूणोदय की कोटि प्रभा(अनेकों सूर्य किरणों) से युक्त हो। राज राजेश्वरी श्रीचक्र प्रिय बिन्दु ही पराशक्ति का सौम्य स्वरूप हो।।१३।।

You abide in all the Thirty six Tattvas of the Universal Shiva. You are All Compassiuon. You are the Majestic Sovereign Supreme. You are Truth, the source of all manifestation. You abide in the Sahsrâra, and roam in the 'Seven' seas. You are attached as well as non-attached and beyond that. Your hue excels the billions of early solar rays. You are in the Primal dot of the

Shri Chakra, which transcendends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari.
Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations/ offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ!13

Shloka 14

क - कादिक्षातं सुवर्ण बिन्दु सुतनुः स्वर्णादि सिंहासनः
नानारत्न विचित्रचित्र रचिता चातुर्य चिन्तामणिः।।
चितानन्द विधायिनी सुविपुला कोटि त्रयीश्यम्बिका
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१४।।

क - कादि-विद्याा की अधिष्ठात्री देवी **क** वर्ग से **क्ष** (संयुक्त अक्षरों) तक तुम्हारा ही शब्द विस्तार है, उसी में हिरण्यमयी आभायुक्त बिन्दु-'चन्द्र बिन्दु', अपने आप में सुदृढ़ शरीर है, अर्थात् सभी बीजाक्षरों में ँ की अनुनासिका ध्वनि ही जिसका स्वरूप है, जैसे **ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं, आँ, फ्राँ, अँ, कँ, टँ, तँ, पँ** इत्यादि वर्णों से गर्भित तुम्हारा पीठासीन सुशोभित है। वही सर्वश्रेष्ठ कल्याण पद, चित्त को आनन्द देने वाली, विपुल विस्तृत आभा वाली, त्रिकोटि देवताओं की अधीश्वरी अम्बिका हो।
श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु, तृप्ति एवं परातृप्ति का वैभव ही पराशक्ति का स्वरूप है।।१४।।

You are seated on the Golden throne. You are abiding in the Ka—Adi Vidyâ, which is engrossed with Bindu.

That is your being of the Varnamâlâ svaroopa. Your throne is extra-ordinarly celestial and Divine, made artistically of Chintâmani jewels. You are the guiding force of the Chidânanda. You are Mother Deity of the Trikoti Devatâs. You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcendends all the desires of duality. Thus adored as the Shri Râja Râjeshwari.
Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations /offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ!14

Shloka 15

ल - लक्ष्मी शादि विरिंचि चक्र मुकुटा द्यष्टाङ्ग पीठार्चिता
सूर्येन्द्वग्नि मयैक-पीठ निलया चिन्मात्र कौलेश्वरी।
गोप्त्री गुर्विणि गर्विता गगनगा गङ्गा गणेश प्रिया
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१५।।

ल - लक्ष्मी के स्वामी नारायण, विरंचि ब्रह्मा, चक्र-मुकुट आदि आयुधों-आभूषणों से युक्त अष्टांग पीठ(प्रद्युम्न पीठ) द्वारा पूजित एवं अर्चित हो। सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा जिसके तीन नेत्र हैं, ऐसी श्रेयस्करी गुणमयी शक्ति, चैतन्य स्वरूपिणी, चिन्मात्र कौलेश्वरी हो, अर्थात् कुलार्णव तंत्र द्वारा अभिप्सित हो। गुप्त से गुप्त तुम्हारी साधना है, उसी से अति गर्विता उद्दण्ड भी हो, गगन-आकाश की अनन्त आभा हो। आदि देव गणेश की आराध्या प्रिय जननी हो।

श्री चक्र में वास करने वाली, प्रिय बिन्दु की विमर्श शक्ति ही तुम्हारी परा शक्ति का स्वरूप है।।१५।।

You are adored by Brahma, Vishnu, Rudra, who are with Chakra a missile, a Mukuta, and seated on the Eight Fold Peettha – which is Pradyumna Peetha. Surya, Chandrama, Agni are adorning your singular Peettha as you are the Kauleshvari. You are most mysterious. You are adored by Ganesha and Gangâ that has descended from the skies. You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari.

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations /offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ!15

Shloka 16

ह्रीं - ह्रीं कार त्रय रूपिणी समयिनी संसारिणी हंसिनी।
वामाचार परायणा सुमुकुटा बीजावती मुद्रिणी।।
कामाक्षी करुणा विचित्र रचिता श्री श्री त्रि मूर्त्यात्मिका।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१६।।

ह्रीं - ह्रीं-कारिणी त्रयरूपिणी-महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती हो। समयाचार-दक्षिणाचार द्वारा सुपूजित, वैष्णवी स्वरूपा

(ह स क ह ल युक्त १५ अक्षरात्मिका हो)। संसार को सृजन करने वाली, हंसः/हंसनी (सः+अहं =सोऽहं) की शुद्धसत्व चैतन्यमयी शक्ति है। वामाचार में भी विचरण करने वाली देवी हो। मुकुट से सुशोभित सकल बीज जननी हो। अतः 'आदिक्षान्तं' अक्षर मूर्ति हो। मुद्रिणी-नैवैद्य मंत्र के प्रारम्भरिक **शब्द-अमृतेश मुद्रया, अमृतीकृतं, अमृतमस्तु** की मुद्रिणी शक्ति हो। कामेश्वरी कामाक्षी अपने नेत्र कटाक्ष से उद्भव कारिणी जननी हो, तथा करुणा की प्रतिमूर्ति हो। विचत्रि रूपा चित्रिणी हो। श्रीमहालक्ष्मी हो, श्री त्रिमूत्तिमयी, कीर्ति, वाक् तुम ही हो। श्रीचक्र का मूल त्रिकोण बिन्दु सहित, अति प्रिय-सौम्य स्वरूप परा शक्ति का ही रूप हो।।१६।।

You are Hreemkâra with Traya Roopini of Mahâ Kâli, Mâhâ Lakshmi, Mâhâ Sraswati. You are within the Samayâchâra Viddhi of Pujâ. You are in the Samsâra, and blessing with the grace of a Hamsini—the Yogic Mudrâ. You enjoy the Vâmâchâra Paddhati, adorning the crown of the Seed – Syllables. You are Mudrini, with Yoga Kriya. You are the Devi Kâmâkshi with All compassion. You make the wonderful Jagatas the realms of Bhuvans as you are the Kriyâ of the Trimurtis. You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari.

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations /offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ!16

Shloka 17

सा बिम्ब-प्रतिबिम्ब लम्बित लसत्-बिम्बाधरा याम्बिका।
जम्बीरोत्पल कर्ण शोभित मुखा जम्बू फल श्री कुचा।।
नानारत्न किरीट दीप्ति लसिता प्रत्यक्ष दीक्षात्मिका।
श्रीचक्र प्रियबिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी।।१७।।

बिम्ब-सूर्य, चन्द्रमा का मण्डलाकार तथा उसी का प्रतिबिम्ब तुम में ही है। विश्वक्रीढ़ा में लम्बित होना अर्थात् लटकन भी तुम्हारा ही रूप है। तुम्हारे होंठ बिम्ब पुष्प की भांति रक्तवर्ण के हैं। कर्ण फूल तुम्हारे जम्बीर और उत्पल पुष्पों के हैं, मुख की आकृति जम्बूफल की भान्ति है, तुम्हारा वक्षस्थल श्रीयुक्त है। मुकुट में नाना प्रकार के मणि हैं, जिसकी विभासा दीप्तिमान है। तुम्हारे द्वारा प्रदत्त वर्णात्मिका दीक्षा, तुम्हारा ही वर्ण स्वरूप है।

श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु, तर्पण से परिपूर्ण श्री राजराजेश्वरी का परात्पर स्वरूप हो।।१७।।

You are within the reflective rays of the Sun and reflecting through the Moonlight. You are twisting in the universal play of manifestation and its sustenance with its decomposition. Your lips are like the Bimba red flower. The ear rings are of 'Jambheer

and Utpala'—lotus flowers. On meditating upon that Svaroopa, we get enchanted in that ecstacy, which is lusterous. It is Your grace, that we receive Deeksha at that Chakreshvara, which is your most sacred abode. You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcendes all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari.

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations /offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ!17

Shloka 18

यत्तेजो निधिभि स्त्वनन्त-घृणिभि-र्नोपाह्यते प्रेरितुं।
हार्द ध्वान्तमपास्य शिक्षणपि तद्ध्यान मात्रा दृशा।।
यत्सद्भादानुभाति सर्वमुदितं भानुं यथा पद्मिनी।
प्रत्यग्दाम नमामि तत्तव वपुः श्री राज राजेश्वरी।।१८।।

जिसका तेज अनन्त निधियों में भी समाया नहीं जाता है। सर्वत्र जहाँ घृणिः/प्रकाश की किरणें हैं। उसी आभा से हम प्रेरित होकर, ध्यान मात्र से क्षण मात्र में ही कृपा के पात्र बन जाते है। सद् का आभास जो भी है, उसी के उन्मेष में दीप्ति उदित होती है। जिस प्रकार सूर्य से पद्मिनी विकसित एवं उल्लसित होती है उसी प्रकार बिन्दु का प्रिय स्वरूप उद्भासित होता है।

श्री राज राजेश्वरी, प्रत्येक रूप से प्रत्यक्ष रूप से तुम्हारे अतुलित सौम्यदाम को नमन-प्रणाम करता हूँ।।१८।।

O Mother abiding in the Chakreshwara! Your Tejas—lustrous self cannot be contained by the infinite treasures. You are the effulgent light beams of the universe. We get attuned to that effulgence only, when we think of Thine graceful existence. It is that Unmesha, which when speaks of your grandeur, the Padmini—lotuses get blossomed. It is just a reflection of that Ullâsa, which the evolving Bindu in the Nine Avarnas or layers do stand for, being,—the interlinked layers of consciousness. You are in the Primal dot of the Shri Chakra, which transcendends all the desires of duality, thus adored as the Shri Râja Râjeshwari. Lastly, I do prostrat at your abode, which is your Yântrik Geometric formation – Shri Cakra Yantra is the Rekhâ Sharira.18

Shri Chakra is the Priya Bindu—the primal dot of existence, which is ever present as the nucleus of the Chakreshwara, and is pleased with the water oblations /offering of water by the devotee. It is verily, the Priya Bindu Tarpana Parâ!

(Source Book: Shri Raja Rajeshwari Stotra)

श्रीशारिके! शरण्ये त्वां मयि दासे कृपां कुरु।

ऋणं-रोगं-भयं-शोकं रिपु नाशाय सत्वरम्।।

हे शारिके। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझ दास पर कृपा करके ऋण, रोग, भय से मुक्त कराकर, शोक और समस्त शत्रुओं का नाश शीघ्र कर लो।

अथ शारिका स्तुतिः

बीजैः सप्तभिः उज्जवला कृकतरसौ या सप्त सप्तिद्युतिः।
सप्तिर्षि प्रणताङ्घ्रि पङ्कज युगा या सप्त लोकर्तिहर्त।।
काश्मीर प्रवरेश मध्य नगरे प्रद्युम्न पीठे स्थिता।
देवी सप्तक संयता भगवती श्रीशारिका पातु नः।।

ऊँ जय भगवति विन्ध्यावासिनि कैलास वासिनि शमशान वासिनि हुङ्कारिणी कालायनि कात्यायनि हिमगिरि तनये कुमार मातः गोविन्द भगिनि शिति कण्ठाभरणे अजेय खड्ग डमरु मुग्दर चषक कल शरचाप वरा-अभय पाश पुस्तक कपाल खट्वाङ्ग गदा मुसुल तोमर चक्रहस्ते कृपा परे प्रभूतिः विविध आयुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरात वेशे ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणी दिव्य तपः विद्यायिनि वेदमातः गायत्रि, सावित्रि, सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरी विश्वकर्तृ समाधि विश्रान्ति मये निरामय पदे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नमिते मोहिनि तोषिणि भयंकर नाशिनि दिति सुत प्रमथिनि काले कालकिंकर - मथिनी कालाग्नि शिखे कालरात्रि अजे नित्ये सिरन्ते योग रते योगेश्वर नमिते भक्तजन-वत्सले सुर प्रिय कारिणि दुर्गे दुर्जय हिरण्ये कुरूमां दयाम्।।

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ गौर्यै नमः

OM GAURYAI NAMAH.

This is the quintessence of the Divine Mother Shakti as 'Gauri' in the poetic format. This is very highly occult Mantra, woven with the philosophy of 'Shabda' and Artha. The emphasis is on the 'Adi Kshantam Akshara Murti' syllables, which is the source of Shri Sharada Devi, who abides in the 'Vaghbhava Koota' of the Bija Mantra. It is Hreem. Its emphasis is on the 'Bhâva-Shuddhi' as the purity in thought and deed. The origin of Gauri goes back to the Nava Râtras, where Devi is adored in the Gauri form, on the Durgâshtami Tithi— 'Eighth Day Nava Durgâ'. May Gauri be blessing to all of us, always! It has been sung by 'Sri Adyâ-Shankara', after he was declared as the 'Sarvagnya' at the Sharada—Peetha, in praise of Gauri, who is in essence the Bhagawati Shri Sharada.

अथ श्री गौरी दशकं स्तुतिः

लीलारब्ध स्थापित लुप्ता-खिल लोकां
लोका तीतै योगिभिः अन्तर्-हृदि मृग्याम।
बालादित्य श्रेणी समान द्युति पुंजाम
गौरीं अम्बाम् अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।1।।

The Divine Mother, Who is adored as Gauri creates this universe without any effort. Only this universe is Her Leela/play. Equally, She absorbs this universe into Her Being. The Yogis do find in Her their own being, when She is realized within. Her infinite aura is seen in the form of dazzling Suns. Verily, I bow to the Divine Mother Gauri, whose eyes are the blossomed lotus. Such a grand beauty of the Divine Mother Gauri is really wonderful. (1)

(Literal meaning of Gauri is the white with golden tinge. She is the 8th Nava – Durgâ, adored on the Durgâ Ashtami Tithi, and on every 8th of the Shukla Paksha.)

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां
पादाम्भोज ध्यान पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीं ईशांग- अर्ध हरां त्वां तनु मध्यां
गौरीं अम्बां अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।२।।

Those devotees, who take refuge at the feet of the Divine Mother Gauri, get freed from the bondage of expectations as the result of their activities. O Mother, You are supremely powerful, being the half portion of the being or existence of Lord Shiva, who has the lotus like eyes. I make my obeisance to you, O Mother Gauri! (2)

प्रत्याहार ध्यान-समाधि स्थिति भाजां,

नित्यं चित्ते निर्वृत्ति काष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य ज्ञानानन्द मयीं तां तडिताभाम्,
गौरीं अम्बां अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।३।।

You bring peace to those devotees, who undergo in the process of Pratyâhâr/control over the senses, Dhyân/ meditation, Samâdhi/transcendental state of mind, get higher form of ecstasy in their minds, when they meditate upon your effulgence. I make my obeisance to you, O Mother Gauri! (3)

चन्द्रपीडा नन्दित मन्द स्मित वक्त्राम्
चन्द्रपीडा अलंकृत लोला लक भाराम्
इंद्रोपेन्द्र आद्यर्चित पादाम्भुज-युग्याम्
गौरीं अम्बां अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।४।।

O Divine Mother Gauri, I do prostrate at your feet, who has the eyes that are resembling like the lotus, and whose face is with smiles, making Lord Shiva absorbed in Bliss. You are adored by Indra and Upendra —Shri Vishnu, as Your self is splendorous with your curls of hair.(4)

नाना कारै शक्ति कदम्बै भुवनानि,
व्याप्तं स्वैरं क्रीडति या सौ स्वयमेका।
कल्याणीम् त्वां कल्प-लतां नति भाजां
गौरीं अम्बाम् अम्बुरुह अक्षीम अहमीड्ये।।५।।

Mother Gauri! You play with different names, professing different Shaktis in the all Bhuvanas—the locations—known as Fourteen Bhuvanas, that is your natural way of playing.

You are Kalyâni—the most venerable Mother, who stands for the welfare of the devotees, like that of a Kalpavriksha, and fulfill all the desires of the devotees. You are having the lotus eyes, I do kneel before you, O Mother Gauri—of the white complexions! (5)

मूलाधारात उतिथ वन्तीम् विधि रन्ध्रीम्
सौरम् चांद्रम् धाम विहाय ज्वलितांगीम्
स्थूलाम् सूक्ष्माम् सूक्ष्मतराम् ताम अभी वन्द्याम्
गौरीम् अम्बाम् अम्बुरुहाक्षीम् अहमीड्ये ।।६।।

—O Divine Mother Gauri, You are with lotus eyes, and you ascent from the Moolâdhara to the Brahma Randra Chakra making the Yogis visualize the Lunar and Solar effects, and thus making your self in gross, subtle and the most subtle form of energy, abiding in the heart of your devotees.(6)

आदि क्षान्तम् अक्षर मूर्त्या विलसन्तीम
भूते भूते भूतकदम्ब प्रविस्तरीम्।
शब्द ब्रहमानंद मयीम् तां अभिरामाम्
गौरीं अम्बां अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।७।।

O Divine Mother Gauri! You are the Akshara Murti—the form of all vowels and consonants from अ a to क्ष sha and that is your entertainment. Your vastness is seen in the manifestation of the different kinds of life forces. You enjoy the शब्द/words with sounds the of Vedas and Agamas. O Divine Mother Gauri! I adore you, as You are with the lotus like eyes, which is pure Yoga. (7)

यस्याः कुक्षौ लीनमखंडम् जगत् अंडम्
भूयो भूयः प्रादुर भूत अक्षतमेव।
भर्ता सार्धं तां स्फटिक आद्रौ विहरन्तीम
गौरीम् अम्बाम् अम्बु रूह अक्षीम अहमीड्ये।।८।।

I bow to the Divine Mother Gauri, who holds and absorbs the Hiranya Garbha, in Her Lap, which is Eternal and in its totality. It is further created without any distortion, as you happen to be the spouse of Shiva, who holds the white crescent, and thus You are adored (8)

यस्यां एतद प्रोतं आशीषं मणि माला
सूत्रे यद्वद क्वापि चरं चाप्यचरं च।
तां अध्यात्म ज्ञान पद व्या-गमनीयां
गौरीं अम्बां अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।९।।

The universe is in motion and movement. It is like a garland of gems in a string, knit by the Devi's grace. It is both static and dynamic. She can only be known or realized through devotion and spiritual knowledge, Her eyes are that of a lotus. We adore that Gauri. (9)

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्ग विधौ संहरणे च
विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिव पत्नीं
गौरीं अम्बां अम्बु रूह अक्षीं अहमीड्ये।।१०।।

The great Lord is Eternal, who is without any digital dimension. He is singular One. But You are witness to His sustenance and dissolution, as well. You save the world always playfully, as You are Shiva's darling. I bow to the Divine Mother Gauri, who has the eyes that of a lotus. (10)

पूजा काले भाव विशुद्धिं प्रदधाना
प्रातः काले भाव विशुद्धिं प्रदधाना।
संध्या काले भाव विशुद्धिं प्रदधाना
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरी दशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पदं उच्चैः शिव भक्तिं
तस्यावश्यं पर्वत पुत्री विदधाति।।११।।

Whosoever will recite this Gauri Dashkam Stotra, with the purity of heart and Bakthi-devotion in mind in the early hours of morning, will have control over his speech. He, will be a 'Vâksiddha

Purusha'. He wil possess enough of riches and will lead that Bhakta to the Shiva Bhakti. Thus Parvata-Putri Parvati will bestow upon that grace to him. (11)

श्रीचक्र की महिमा

यानि तीर्थानि भारतवर्षे, तानि तीर्थानि कश्मीरमण्डले।
यानि तीर्थानि कश्मीरमण्डले, तानि तीर्थानि वितस्तायाम्।

कश्मीर की पुण्य भूमि में जगन्माता श्रीशारिका भगवती विमर्श स्वरूप चक्रेश्वर शिलाविग्रह, देवी देवताओं से स्तुत्य स्थली रही है। इस पुण्य भूमि मे तैंतिस करोड़ देवी-देवताओं का वास रहा है। शिव के प्रादुभार्व स्वरूप में श्री अमरनाथ स्वामी (अमरेश्वर), हरेश्वर, ध्यानेश्वर, सुरेश्वर, नन्दीश्वर एवं अष्टभैरव हैं। श्री ज्वाला, श्री महाकाली, श्री त्रिपुरसुन्दरी, श्री बाला, श्री ज्येष्ठा देवी, श्री राज्ञी देवी, जगदम्बा के ही विभिन्न रूपों में विराजमान हैं। एक ओर भगवान शिव का प्राकृतिक स्वरूप, तो दुसरी ओर भगवती जगदम्बा का सौम्य स्वरूप कितना अद्भुत दिव्य दर्शन है। श्रीनगर के क्षेत्र में अष्टादशभुजा शारिका कश्मीरी पण्डितों के आध्यात्मिक चिन्तन में श्रेयस्करी, नित्य विलासिनी, चेतनास्वरूपा परमेश्वरी है। इस प्रकार शारिका भगवती सृष्टिकर्त्री है तथा दुःख विनाशिनी सर्वस्वरूपा राजराजेश्वरी भी हैं। श्रद्धा, भक्ति, परिक्रमा, पूजा, अर्चना, एवं मंत्र साधना से देवी की आराधना की जाती है, क्योंकि शारिका श्रेयस्करी पूर्णा-प्रकृति है।

वैसे तो भक्तों की मान्यता है- कि तेंतिस (३३) कोटि देवी देवताओं का वास श्री शारिका पर्वत (हारी पर्वत) के कण-कण में है। जो भी भक्त श्री शिला रूपिणी शारिका की परिक्रमा आस्था से, श्रद्धा एवं अनुष्ठान से करते हैं उन्हे मनोवांच्छित फल प्राप्त होते हैं। इसमें संदेह नहीं है।

वागुद्भूता परा शक्तिर्या चिद्रुपा परा-अभिधा।
वन्दे तामनिशं भक्तया श्री कण्ठार्ध शरीरिणीम्।।

वैदिक वाक् से उद्भूत पराशक्ति जो चित् रूपिणी परा-अभिधामयी वाग्वादिनी है, वही श्रीकण्ठ शिव के अर्ध शरीर में नित्यलीन होती हुई, उसी(चक्रेश्वर) का अभिन्न अंग है। भक्तजन अहोरात्र उसी पराशक्ति सप्ताक्षर-वर्णात्मिका देवी की वन्दना करते हैं।

जो धनुष, सायक-पंखीला बाण, इन आयुधों को धारण करने वाली, बादलों में से निकलते हुए चन्द्रमा के सदृश शीतल सुन्दर मुख वाली, गौरी-गौर वर्णा,पर्वती के देह से उत्पन्न हुई, त्रिनेत्रधारी, संसार की अधिष्ठात्री देवी, शुम्भ आदि दैत्यों को नाश करने वाली है। वही शब्दमयी वर्णात्मिका है तथा **'ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं ओ३म् शकार रूपायै नमः'**

चक्रेश्वरी मूल मंत्र धारण करने वाली है। मालिनी के रूप में नफकोटि वर्णात्मिका है। अन्ततः **ओ३म् ऐं, ह्रीं, श्रीं श्रीमद्राज राजेश्वर्यै नमः** से सुशोभित है। यही **बीजाक्षर** है।

प्रायः ब्रह्म मुर्हूत्त में उठकर, नित्य आवश्यकताओं से निवृत्त होकर साधक **श्री सप्तमातृका रूपिणी शारिका** की परिक्रमा घर से निकल कर आरम्भ करते हैं।

सर्व प्रथम साधक शारिका पर्वत की प्रदक्षिणा आग्नेय कोण से आरम्भ करके-श्री गणेश की शिला को **'हेमजासुतं-अम्बुज-गणेशं -ईश-नन्दनम्'** से अर्घ्य, दुग्ध, पुष्प, जल इत्यादि चढ़ाते हैं, फिर प्रदक्षिणा करते हुए सप्तर्षि शिला से होते हुए कालिका देवी के प्रांगन में, योग मुद्रा में बैठकर **'माया कुण्डलिनी'** का स्त्रोत्र

पाठ पढ़ते हैं। वहाँ चार चिनारों की परिक्रमा करते हुए देवी आँगन में नत मस्तक होते हुए चक्रेश्वर के सिद्ध पीठ पर ध्यानरत होते हैं। स्वयंभू-शिला सप्तबीजाक्षरों से प्रज्ज्वलित शक्ति, भोग और मोक्षप्रदायिनी है। तत्पश्चात् उत्तर में षोडश मातृकाओं **'अ से अः'** के शब्द शरीर में अवस्थित होकर **श्रीशारी** एवं **सिद्ध लक्ष्मी** की शिलातन-शिलात्म स्वरूप को प्रणाम करके अपने आप को कृत्तकृत्य समझते हैं। वामदेव ऋषि बहुरूप मंत्र के दृष्टा का पूर्व दिशा में स्थान है। आगे परिक्रमा करते हुए श्री हनुमान जी का गर्भग्रह आता है। नील वर्ण-आभा से वरूणात्मिका कुण्डलवासिनी भगवती पोखरीबल जल स्त्रोत, परम पावनी सती का ही प्रतिरूप है। अन्ततः हाटकेश्वर भैरव का नमन करके एक प्रदक्षिणा पूर्ण होती है।

निर्गुणः परमात्मा तु त्वदा श्रयतया स्थितः।
तस्य भट्टारिकासि त्वं भुवनेश्वरी भोगदाः।।

(शक्ति दर्शन)

हे शारिके ! निर्गुण परमात्मा भी शक्ति के अधीन है। उस शिव भट्टारक के होते हुए भी तुम ही भुवनेश्वरी भोग प्रदान करने वाली हो।

श्री शारिका देवी की परिक्रमा करते करते साधक इन्द्राक्षी का पाठ करते है, या किसी भी शक्ति मंत्र का जाप करते हैं। मुख्यतः इस प्रकार के ध्यान श्लोक का स्मरण करते हैं-

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी।
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।।
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी।

ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि।।

-(पंचस्तवी१-१८)

सप्ताक्षरमयी देवी का स्वरूप

हमारे लिए आध्यात्मिक क्षेत्र में शारिका पर्वत का महत्व परात्पर शक्ति पीठ के रूप में विद्यमान है, जहाँ पर शिलारूपिणी चक्रेश्वरी 'चक्रेश्वर' का अभिन्न रूप है। यह स्वयंभू शिला है, जिसेमें बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, चतुर्दशकोण, वृत्तत्रय एवं भूपुर, श्री शारिका की स्वनिर्मित्त वर्णमाला के स्थायी कोष्ठ हैं। सप्त मातृकाओं का उद्‌गम एवं प्रार्दुभाव हमारी सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न भाग बन गया है।

सप्तक शब्द पर.....,

सप्तनां समूहः, सप्तक, सात के समूह को सप्तक कहते हैं। सप्तकी-सप्तभिः स्वरैः इव कायति शब्दायते। सप्त स्वरों से कायित-शब्द शरीर पर आधारित वर्णमाला को सप्तकी कहते है। यही सप्तकी की परिभाषा है। अतः शब्द के सात गुण होने के कारण सप्तधा शब्द का विवेचन किया जाता है। इसके कारण से ही सप्तमातृका विद्यमान है, जिसमें नैसर्गिक स्थिति एवं विकृत स्वरूप के पश्चात् भी अपना चैतन्य पुनः प्राप्त करने की क्षमता होती है। मूलधातु से शब्द बनते हैं। सृष्टि रचना में शब्द का माहात्म्य महत्त्वपूर्ण प्रशंसा से ओत्प्रोत है। सामवेद में कहा गया हैः

अहं प्रवदिता स्याम् (६११)

एक मानव की प्रार्थना है कि मैं सर्वत्र प्रगल्भता से बोलने वाला बनूँ। यजुर्वेद में कहा गया है-

वयं स्याम सुमतौ(११-२१)

हे ईश्वर! हमें सद्बुद्धि प्रदान करें। भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं- नक्षत्राणामहं-शशी (गीता अध्याय १०, श्लोक २१) अर्थात् नक्षत्रों में चन्द्रमा है। इसी पृष्ठभूमि में आगम शास्त्र के आचार्यों ने भी सप्तमातृकाओं की शब्द शैली में चन्द्रबिन्दु की ध्वनि को महत्त्व दिया है, जैसे-

ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं, अं, कं, चं, टं, पं एवं शिव-शक्ति के एक रूप में **फ्रां, शां, कं, रं, यं, लं** तथा **'क्ष, त्र, ज्ञ'** को संयुक्त अक्षरों में महत्त्व दिया है। **'क्षां क्षेत्राधिपतये नमः' 'रां राष्ट्राधिपतये नमः'** शारदा सहस्त्रनाम में **'हस्त्रों'** शब्दों के बीज पर आधारित ध्वनियों का आह्वान किया जाता है। वास्तव में बीजाक्षर ही पराशक्ति का सारभूत शरीर अर्थात् 'हृदय' है। हृदय भाव प्रदान चैतन्य है।

सप्तमातृकाओं का स्वरूप

सप्तमातृकाएं सुन्दरता की अधिष्ठात्री देवीयाँ हैं। कारण यूँ है.., शाश्वत सुन्दरम् का भाव सौन्दर्य है। पराभक्ति में भी साधना, वास्तव में सौंदर्य है तथा सौंदर्य जीवन की परिभाषा है। सौंदर्य में गति है, प्रकाश है। प्रकाश ही शिव है, शिव सदा अन्तःकरण की शुद्धता में वास करते हैं। निर्मल मन की प्रसन्नता के साथ-साथ एक भक्त अथवा साधक निर्गुण-निराकार, निर्विशेष में लीन होकर परात्पर तत्त्व जानने की प्रक्रिया में अपने मन से उसी निराकार को सौंदर्य के आँचल में देखने के लिए लालायित हो जाता है। वही सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की अवधारणा है। सगुण-साकार दिव्य लीलामयी शुद्ध-तत्वमयी भगवती माता चक्रेश्वरी को एक साधक 'नाद' अन्तर्मुखी शब्द-ध्वनी से पुकार कर शैव दर्शन के

३६ तत्त्वों के आधार पर अवरोहण में देखता है। उसके लिए विलास, उल्लास में परिणत हो जाता है। शाक्तोपाय के अर्न्तगत निगुर्ण, निष्कला संवित् शक्ति सगुण होकर सकला, मध्यमा - प्रतिपदा का रूप धारण करती है। यही सप्तमातृका का बीज तन्तु है। सप्तमातृका का सिद्धांत श्रीचक्र का वर्णात्मिका स्वरूप है। श्रीचक्र-चक्रेश्वर की अवधारणा है-

३६ तत्त्वों के गर्भाशय में स्थित, आद्या परमशक्ति बिन्दु रूप में अवस्थित होकर, 'पुँ' भाव में प्रवेश करती हुई ध्वनि स्वरूप बन जाती है। ध्वनियाँ तरंगित होती हैं। रेखाओं द्वारा उसका रेखांकित स्थान नव चक्र पटल स्वरूप है। उसका निवास कहाँ है-

बिन्दु त्रिकोण-वसुकोण दशार-युग्म मन्वश्र नागदल संयुक्त षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणी सदन त्रयं च श्रीचक्रराजमुदितं परदेवतायाः।।

सप्तमातृकाओं का वास "मन्वश्र नागदल संयुक्त" में निहित है। इन चौदह त्रिकोणों में क्रमशः मातृकाओं का भ्रमण-प्रतिपदा से लेकर सप्तमी तक, अष्टमी को मिलन, पुनः नवमी से पूर्णिमा तक चलता रहता है। इसी कारण शुक्ल अष्टमी को कश्मीर के शक्ति उपासक चैतन्य स्वरूपिणी श्री महराज्ञी देवी का व्रत, पूजा, अर्चना करते रहते हैं। यही चक्र परिक्रमा कहलाई जाती है। चौदह त्रिकोण महेश्वर सूत्र में गर्भित हैं।

आगम शास्त्रों के अनुसार मातृका ही माता होती है। अतः उपनिषद् की वाणी में कहा गया है-'मातृ देवो भव'। माता को देवता जान लो। यह माता भौतिक माता तो है ही, परन्तु शैक्षणिक क्षेत्र में गुरूमाता, आध्यात्मिक क्षेत्र में जगन्माता कहलाई जाती है। आध्यात्मिक परिधि में उनका सप्तसमूह होता है, अतः उन्हें सप्तमातृका ही कहते हैं। उनका ध्यान एकान्त भाव में एकात्मक

सूत्रात्मिका ग्रंथि है, जिसे कश्मीरी भाषा में 'काहनेथुर' और 'दिवगोन' कहते हैं। दिव्य गुण के होम में 'दिवतगुल्य' के नाम से सप्तमातृकाएँ आमंत्रित की जाती है। दिवतु शब्द मूलतः 'दिव्य' अर्थातृ दैवी गुणों से युक्त, प्रभावशाली, प्रकाश पुंज से पूर्ण है, और गुल्य का मूल स्वरूप गुलः, जिसका शाब्दिक अर्थ संस्कृत भाषा में गुड अर्थात् शर्का है। यह शुभ वेला का शगून कहलाता है। कश्मीर की शाक्त पद्धति के अनुसार सप्तमातृकाएं श्रीचक्रेश्वर शिला रूपिणी शारिका के साथ ही सदा कार्यरत रहती हैं, और भक्तों का मार्ग दर्शन प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कराती है। शैव शास्त्र के अनुसार भी सप्तमातृकाओं का महत्व चक्रराज-प्रिय-बिन्दु से है।

"श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परा श्री राज राजेश्वरी"

श्री चक्र के मध्य बिन्दु में ही श्री राजराजेश्वरी, जिसका मूल मंत्र एँ क्लीँ सौः है, उस पर मात्र जल का तर्पण एंव अभिषेक करने से पराशक्ति वाङ्मयी शक्ति की साक्षात् अनुभूति होती है। पूजा में तर्पण का महत्त्व माना जाता है। तर्पण भी तीन प्रकार के हैं- ऋषि, देव और पितृ तर्पण। तर्पण पंचयज्ञों में एक यज्ञ है, जिसका शब्दिक अर्थ तृप्त करना है।

देवी माहात्म्य के अनुसार अष्टमातृका का स्वरूप भी वन्दनीय है।

यह अष्ट मातृका-**१.ब्राह्मी, २.वैष्णवी, ३.माहेश्वरी, ४.इन्द्राणी, ५.कौमारी, ६.वाराही, ७.चामुण्ड़ा, ८.नारसिंही** कहलाती है।

कश्मीर पद्धति में भैरवी की पूजा, सप्तमातृकाओं के अन्तर्गत ही आती है। अतः चक्रेश्वर के साथ वीरभद्रा भी पूजी जाती है।

समष्टि चक्षु अद्वैत रूप का सृष्टा है, और व्यष्टि चक्षु उसका भोक्ता है। अन्नता स्वरूपा! पराशक्ति, विचित्र विश्व की विमर्श शक्ति है। यही सप्तमातृका की 'वाक्शक्ति' है, एवं आत्म प्रकाश है। वाक् शब्द सारगर्भित है।

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनी त्युच से,
त्वतः केशव वासव प्रभृतयोऽ प्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
सात्वं काचितऽचिन्त रूपा महिमा शक्तिः परा गीयसे।।

-लघुस्तवः १५

चक्रेश्वर के भीतर अ वर्ण अन्तर्याग जाना जाता है। और अः विस्मय या बहिर्याग कहलाया जाता है। अति सौम्य ध्वनियाँ मध्यमा, पश्यन्ती, परा-सूक्ष्म तरंग वत समस्त ब्रह्माण्ड को आच्छादित करती है। सही वर्णात्मिका चक्रेश्वरी श्रीशारदा, सर्वमंगला एवं अमृत कला से पूजित होती है। **१. वाग्देव्यै नमः, २. वागीश्यै नमः, ३. सरस्वत्यै नमः, ४. महेश्वर्यै नमः, ५. अनलप्रियायै नमः, ६. वेण्यै नमः, ७. विद्याधर्यै नमः।**

(यह वास्तव में वर्णों की उद्भव मातृकाएं है।)

वाग्देवी वागीशी, सरस्वती, माहेश्वरी, अनल प्रिया, वेणी, विद्याधरी चक्रेश्वर का सप्तम चक्र है।

अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले! मुझे अभीष्ट सिद्धि प्रदान कीजिए क्योंकि तू शरणागतं वत्सला है **ऊँ ह्रीं क्लीं सौः नमो नमः। मातृका भगवत्यै ह्रीं स्वाहाः ह्रीं ऊँ।**

(यह मातृकाओं का निवेदन मंत्र, अर्चना एवं जप के लिए है)

अथ श्री सप्तमातृका रूपिणी शारिका भगवती स्तुतिः

बीजैः सप्तभिरूज्जवला कृतिर सौ या सप्त सप्ति द्युतिः।
सप्तर्षि प्रणतांघ्रि पंकज युगा या सप्तलोका र्तिहत।।
काश्मीर प्रवरेश मध्यनगरे प्रद्युम्नपीठे स्थिता।
देवी सप्तक भगवती श्री शारिका पातु नः।।

सप्त बीजशक्ति- **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ** का ह्रस्व-दीर्घ ध्वन्यालोक से जाज्वल्यमान होती हुई, प्रकाश पुंज से युक्त, सप्त-ऋषियों' **गौतम, भारद्वाज विश्वामित्र, जमदग्नि, कश्यप, वसिष्ठ** तथा **अत्रि** द्वारा अर्चित एवं चक्रेश्वरी देवी, जो सप्तलोकों- **अतल, विमल, सुतल, तलातल, महातल, रसामल** एवं **पाताल** लोकों के हित का कारण स्वरूप है, उस देवी को नमन हो। कश्मीर प्रवरेश मध्य नगर प्रद्युम्नपीठ-चक्रेश्वर स्थित, देवी स्वरूपा, सप्तक-बीजाक्षरों से युक्त, श्री शारिका हम सभी की रक्षा करें! ओ३म् शान्ति।

शाक्त ग्रथं में कहा गया है-

एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य भिन्नाः चतुर्धा व्यवहार काले।
पुरुषेषु विष्णो भोगे भवानी समरेश्च दुर्गा प्रलयेश्च काली।।

शक्ति एक ही है, परन्तु भिन्न-भिन्न रूप है। वही वाग्वादिनी भी है। स्वतंत्र शक्ति की अधिष्ठात्री देवी है। वर्णों में समाहित है तथा संगीत के सात सुरों में ध्वन्यालोक से मन्त्र मुग्ध कर देती है। **छन्द-अनुष्टुप्, जगती, गायत्री, उष्णिक्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, सप्तमातृकाओं का ही छन्द स्वरूप है।**

यही सप्तमातृकाएं- **ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐंन्द्री, वाराही, नृसिंही** है। ये दैत्यदलन के लिए दिव्य-रूप को क्रियांवित कर लेती है।

वास्तव में सप्तमातृकाएं ही विष्णु-व्याप्त चराचर एवं विस्तृत रूप में शैव दर्शन के आरोहण द्वारा पृथ्वी तत्त्व से आरम्भ होकर पच्चीसवें तत्त्व में पुरुष तत्त्व की वैष्णवी शक्ति है। यही मातृकाएं भोग में 'भवानी-अस्ति', 'सा-अस्ति' का सम्पादन करती हैं। सामरिक अवस्थिति में दुर्गा के प्रादुर्भाव को जन्म देकर युद्ध रणक्षेत्र में आयुधों के समेत-सवाहन दैत्य दमन एवं नाश करने में तत्पर रहती है। परन्तु प्रलय काल के समय यह शक्ति काल तत्त्व रूपी अवरोहण 'शिव' तत्त्व को लाँघती हुई, ग्यारहवें तत्व 'काल' को भी प्रलय की अवधि में समेट लेती है। सत्व, रजस् एवं तमस् इन तीन गुणों को भी प्रलय के आँचल में विलय कर लेती है। इस विलय का नाम संधि है। अतः

अ + अ का दीर्घ आ, इ + ई/ ई का ई, उ + ऊ का ऊ, ऋ + ॠ का ॠ, ऌ + ऌ का ॡ, अ + इ का ए, अ + उ = ओ, अ + ए = ऐ, अ + ऋ = अर् बन जाता है।

प्रत्येक मातृका, जो वर्णात्मिका है, उसका अपना शब्द शरीर होता है। संख्या वाचक शब्दों में भी सामान्यतया-"**अनुनोदित सप्तितौ**" स्वर होता है। जैसे नवदुर्गा में प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी संख्या में शक्ति का ही प्रतिपादन होता है। शून्य से लेकर नौ संख्या तक सप्तमातृकाओं के समेत प्रकट होती है। श्री चक्रेश्वर का अपना वैभव-अष्टादश भुजा शारिका है, उसी के दिव्य रूप से अवतरित होती है। इसीलिए सप्तऋषियों का वास भी चक्रेश्वर के पास है। नैऋत् तथा वायव्य कोण में सप्तऋषि शिला है।

भगवान शंकर की अभिन्न शक्ति भवानी रूप में अवतरित होने के लिए मातृकाओं का रूपधारण करती है। शाक्त धर्म में अर्न्तयाग साधना की कुंजी **'सिद्धकुंजिका स्तोत्रम्'** में है। जिसमें **अं कं चं रं तं लं** आदि वर्णात्मिका का स्वरूप ध्वनि रूप में प्रकाशित होता है। इस स्तोत्र में दशमहाविद्या का, नवार्णविद्या का, कादि विद्याा एंव सप्तमातृका का रूप स्वर, व्यंजनों में मुखरित होता है। आगम के अनुसार देवी की उपासना ही बहिर्याग की उपासना है।

मातृका पूजन एवं न्यास

मातृका पूजन में 'स्वप्राण प्रतिष्ठा' इस प्रकार वर्णित है:

ऊँ अस्य स्व प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राण शक्ति देवता आँ-बीजं, ह्रीं-शक्तिः, क्रों कीलकं स्व शरीरे चण्डिका देवता प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।।

ऊँ बीजाय नमो गुह्ये ऊँ ङं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ऊँ क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे। इति ऋष्यादि न्यासः।।

अथ कर न्यासः ऊँ कं खं गं नाभौ वायुवाग्नि वाभूर्म्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः

ऊँ ञं चं छं झां जं शब्द स्पर्शरूप रस गंधात्मने तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)।

ऊँ णं टं ठं डं श्रोत्र त्वक् नयन जिह्व प्राणात्मने मध्यमायां नमः (शिखायै वषट्)।

ऊँ नं तं थं धं दं वाक् पाणि पायूप स्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय नमः (अस्त्राय फट्)। इति न्यासः।

अथ मस्तका आरभ्य हृदयान्तं (क्रों) इति स णि बीजं स्मेरत्।

ऊँ यं त्वागात्मने नमः।

ऊँ रं असृगात्मने आत्मने नमः।

ऊँ लं मांसात्मने नमः।

ऊँ वं मेदात्मने नमः।

ऊँ शं अस्थि आत्मने नमः।

ऊँ यं मज्जात्मने नमः।

ऊँ सं शुक्रात्मने नमः।

ऊँ ह्रौं ओजात्मने नमः।

ऊँ हं प्राणात्मने नमः।

ऊँ सं जीवात्मने नमः।

इति दृष्ट्या हृदि विन्यसेत।

ऊँ यं रं लं वं शं भां सं हं लं क्षं इति मूर्द्धादि चरणावधि व्यापक कुर्यात्। ऊँ मण्डकादि परतत्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः। ऊँ जयादि शक्तिष्योः नमः। इति नत्वा। ऊँ आँ ह्रीं क्रों पीठाय नमः। प्राणशक्ति देव्यै नमः।

(मण्डक का शब्दिक अर्थ कश्मीरी भाषा में देवता के निमित्त पकाया हुआ अन्न है।)

अथ ध्यानम्।

ऊँ पाशं चापा सृक्कपाले शृणी शूंछूलं हस्तै र्विभ्रतीं रक्त वर्णाम्।

रक्तोदन्वत्पोत रक्ताम्भुज स्थां देवीं ध्याये प्राण शक्ति त्रिनेत्राम्।

इति ध्यात्वा हृदयादि करं निधायः-

ऊँ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं भां सं हौं हंसः।

ऊँ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणाः/इह स्थितः। प्राणः।

ऊँ आं क्रीं क्रों यं रं लं वं शं भां सं हौं हं सः

ऊँ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः जीव इह स्थितः। प्राणः।

ऊँ आं ह्रीं क्रों यं रं लं शं भां सं हौं हं सः

ऊँ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि चाङ् मनश्चक्षः श्रोत्र जिह्व घ्रण पाद पायु उपस्थिाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।३।।

इति वारत्रयेण स्वशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठाप्य। ततः ऊँ इति प्रणवेन (१५) पंचादशा वृतिं कृत्वा अनेन मम देहस्था चण्डिकायाः गर्भाधानादि पंचदश स्कारान्संपादयामि।।

एवं प्राणान्प्रतिष्ठाप्य। देवी भूत्वा देवी यजेत्।

चण्डिका रूपमात्मानं भावयेदिति प्राण प्रतिष्ठा।।

अन्तर्याग-बहिर्याग आदि अनुष्ठान से बीजाक्षरों का आगमिक स्वर सिद्धान्त स्पष्ट होता है। ऋग्वेद में स्वर शब्द का प्रयोग शब्द-वाक् अर्थ में हुआ है, जबकि आगम में यह वाक् देवी (वाग्देवी) का शब्द शरीर है। शतपथ ब्राह्मण में स्वर शब्द का प्रयोग 'श्री' के अर्थ में माना जाता है। मंत्रों के पद पाठ की शुद्धता स्वर के अधीन ही है। वैदिक निरूक्त(१-६-१८) से भी सिद्ध होता है। **श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तत्परा श्री राजराजेश्वरी मंत्रमयी शक्ति** इस का उदय है। इसी के अन्तर्गत दश महाविद्या का प्रकटीकरण होता है। महा निर्वाण तंत्र के आचार्यों ने सम्पूर्ण शब्दराशि को आगम-निगम भेद से शब्द ब्रह्म या सत्य स्परूप नित्य शब्द को **परा-पश्यन्ति-**

मध्यमा-वैचारी में आत्मसात किया। इसी आर्ष चिन्तन के अनुसार 'वाक्' -'अनुष्टुप्' कहलाती है। अपुष्टुप् वाक् से **क-च-ट-त-प** आदि सप्त स्वर वाक् का विकास होता है। कहा गया है: 'स्वरोऽक्षरम्' - वर्णमाला के स्वर अक्षर- Immutable Phonemes हैं। शब्द का अक्षर और शास्त्र भी प्रमाण है।

ॐ अस्य श्री मातृका मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषि गायत्रीच्छन्दो मातृका सरस्वती देवता ह्रलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्लीं कीलकं मातृका न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि का न्यास :

ॐ ब्रह्मणे ऋष्ये नमः शिरसि।
ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ मातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः हृदि।
ॐ हतभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्यो।
ॐ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः सर्वांग।

इसके पश्चात् करन्यास

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ उं टं ठं ढं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां वौषट्।
ॐ एं तं थं नं ऐं अनामिकाभ्यां हुम्।
ॐ ओं पं फं बं भं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्।
ॐ अं यं रं लं वं भां सं हं लं क्षं अः -
करतल कर-पृष्ठाभ्याम् अस्त्राय फट्।

वर्ण माला के इसी क्रम से अंगन्यास

१. हृदयाय, २. शिरिसि ३. शिखायै, ४. क्वचाय ५. नेत्राय ६. अस्त्राय को प्राणान्वित करना है।

इन न्यासों के अतिरिक्त अन्तर्मातृका न्यास शरीर के छः चक्रों में अक्षरों का न्यास किया जाता है। रेखांकन निम्न प्रकार से है-

तीन रेखाएं क्रमशः अ, क, थ से आरम्भ होती है।

त्रिकोण के मध्य में सृष्टि-स्थिति-लयात्मक बिन्दुरूप पूर्णब्रह्म का स्वरूप है। यह ध्यान की अवस्था है, इसी ध्यान को अन्त मातृका न्यास भी कहते हैं।

देवता के निवासस्थान को पीठ भी कहा जाता है। ऐसा शक्ताचार्यों का मत है जैसे "पीठेश्वरी जगन्मातरं वन्दे श्री शारिकां।"

प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोप-शोभिताम्।
पीठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम्।।

शाक्त शास्त्रों के अनुसार मन्त्र, भाव, प्राण तथा अचिन्त्य यंत्र देवी शक्तियों के संयोग से, साधक के शरीर में ही पीठ उत्पन्न हो जाते हैं। इसी आधार पर हृदय में – आधार शक्ति, प्रकृति, कूर्म, अनन्त-आकाश, पृथ्वी, क्षीर समुद्र, श्वेत द्वीप, मणि मण्डप, कल्प वृक्ष, मणि वेदिका, रत्न सिंहासन गठित होता है। न्यास आदि में **ॐ**, अन्त में नमः जोड़ने से होता है। दाहिने कन्धे पर धर्म, बायें कन्धे पर ज्ञान, बायें ऊरू पर वैराग्य, दाहिने ऊरू पर ऐश्वर्य, मुख पर अधर्म, बायें पार्श्व में अज्ञान, नाभि में अवैराग्य, दाहिने पार्श्व में अनैश्वराय/ अनीश्वर भाव भी है। अर्थात् मनुष्य में विद्या भी है, अविद्या भी, परन्तु विद्या से अविद्या का नाश सम्भव है।

इसके पश्चात् हृदय में-

ऊँ अनन्ताय, पद्माय, अं सूर्य मण्डलाय--द्वाद्वश कलात्मने, उं सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने, मं बह्नि मण्डलाय दश कलात्मने, पं परमात्मने ह्रीं ज्ञानात्मने नमः का विधान है। आर्ष पद्धति के अनुसार सिर में ऋषि, मुख में छन्द, हृदय में इष्ट देव/देवी तथा सर्वांग में शिवशक्ति युक्त/सशक्ति अपेक्षित देवता का न्यास किया जाता है।

इसी न्यास से चित्त, चित्ति, चैतन्य, चिन्मय से एकाकार हो जाता है केवल शुद्ध चैतन्य का साक्षात्कार ही रह जाता है। जीव और शिव शक्ति का एकाकार स्थूल बिन्दू 'शब्द' कहा गया है, यही सूक्ष्म सत्त्व सचिन्तन है, जो अचिन्तन है, नाम रूप को उल्लंघित कर 'पर-बिन्दु' कहा गया है-

सत् ही सौम्य है, भेद शून्य, विषेश रहित, निर्विकार, असंगतियुक्त अव्यय, अप्राण-निरन्तर स्वगत, यही मन है।

मातृका पूजनमेव मातृ-वन्दना

मातृका पजन ही मातृ तत्त्व की वन्दना है। जगत् जननी श्री शारिका शिला रूपिणी चक्रेश्वरी इस ब्रह्माण्ड की रचना एवं पालन करती है, वह ब्रह्म से अभिन्न है। चक्रेश्वर बीज रूप में ब्रह्म तत्त्व है। शक्ति स्वरूपा सहस्त्रनाम्नी देवी शारिका शिव/चक्रेश्वर की सक्रिय अवस्था है। इस की वृत्ताकार गति क्रियात्मक शक्ति है। सप्तमातृका स्वरूपा शक्ति को व्यक्त रूप में भी पूजा जाता है। **माया, महामाया, मूल-प्रकृति, विद्या, अव्यक्त, अव्याकृत, कुण्डलिनी, महेश्वरी, आद्याशक्ति, नव दुर्गा, काली, महाकाली, लक्ष्मी, सिद्ध लक्ष्मी, भद्रकाली, बाला, त्रिपुरा 'पराशक्ति' की ही अभिव्यक्तियाँ**

है। वह द्वादश अदित्यों के साथ द्वादशकाली का भी स्वरूप धारण करती है, जिनका स्वरूप इस प्रकार है-

स्थूलं शब्देति प्रोक्तं सूक्ष्मं चिन्तामयं भवेत्।
चिन्तया रहितं यत्तु तत्परं परि कीर्तितम्।।

शिव-शक्ति-बिन्दु समस्त तत्वों के उपादान रूप से प्रकाशमान है। शैव तंत्रों के आधार पर शुद्धमाया तत्व शुद्ध जगत् का उपादान बिन्दु है। कर्त्ता शिव है, कारण शक्ति है। बिन्दु महामाया का संकोच है तथा प्रसार में श्रीचक्र की उत्पत्ति का यांत्रिक स्फुरण भी है। यही 'कालचक्र' भी है और 'भवचक्र' भी। शाक्तमत के अनुसार सृष्टि, पालन, संहार, निग्रह और अनुग्रह का स्फुरण एवं कर्त्ता परमेश्वर शिव है। ब्रह्मादि देवता द्वार मात्र है। जिन्हे चक्रेश्वर में भूपुर की संज्ञा दी जाती है।

समस्त भावों के मनन और सम्पूर्ण सृष्टि के त्राण के लिये मंत्ररूपा शक्ति मनन-त्राण रूपिणी, सप्तमातृका कहलायी जाती है।

अकारादि मातृका ही 'कलादेवी-रश्मि' विभिन्न गुणविशेषों से पूजी जाती है। स्थूल वर्णरूप-पद-वाक्य की संरचना से वागदेवी सूक्ष्म से स्थूल रूप में अवतरित होती है।

अक्षर योग

वर्णमाला द्वारा अपने शरीर में स्फुरण पैदा करना षड्ंग न्यास कहलाता है।

अथ कर न्यासः

१. अं ऊँ आं - अंगुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः।
२. इं ऊँ ईं - तर्जनीभ्यां नमः शिरसे स्वाहा
३. उं ऊँ ऊँ - मध्यमाभ्यां नमः शिखायै वौषट्।

४. ॠं ऊँ ॠं - अनामिकाभ्यां नमः कवचाय हुँ
५. एं ऊँ ऐं - कनिष्ठाभ्यां नमः नेत्राय वौषट्
६. ओं ऊँ औं- कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट्

ध्यान मंत्र :

अकारादि-क्षकारान्ता मातृका वर्ण स्वरूपिणी।
यया सर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम्।।

भवार्थः- मुख्यतः अ से लेकर अः तक के सौलह वर्ण, अपने आप में स्वतंत्र है। इस स्वर स्वरूप को किसी का आश्रय नहीं लेना पड़ता है, अपितुः व्यंजन अपने आप में अस्पष्ट होने के कारण इन १६ वर्णों में से ध्वनि के आधार पर अपनाता है। यही स्वर सिद्धांत कहलाता है। अतः विशुद्ध चक्र के १६ पद्मपत्रों में इनका वास माना जाता है। ध्यान्यात्मक स्वरूप में १,३,५,७ का वर्ण ह्रस्व है, तो २,४,६,८ दीर्घ है। **अ-अर्न्तयाग** है। **मंत्राणां मातृका देवी-देव्यथर्वशीर्ष** के अनुसार मंत्रों का स्त्रोत 'ऐं' कहलाया गया है। पंचस्तवी में वर्णित है :

प्रलीने शब्दौघे तदनु विरते बिन्दु विभवे,
तत स्तत्त्वे चाष्ट ध्वनिभिर्नु पाधिनि उपरते।
श्रिते शक्ते पर्वण्युन-कलित चिन्मात्र गहनां
स्व संवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम्।।

-सकलजननी स्तवः ५/१८

मूलाधार चक्र में ध्यान स्थिर होने पर ध्वनियाँ सुनने में आती है, तत्पश्चात् नादध्वनियाँ लय की अवस्था में आकर, योगी को शिव रूपी प्रकाश का साक्षत्कार होता है। तत्पश्चात् यही योगी अष्टध्वनिमिः ..... आठ प्रकार की ध्वनियों से अवगत

होता है। शक्ति-मातृका स्वरूपा की महत्ती कृपा से उत्कृष्ट स्वभाव से पूर्ण संवित् का रसपान कर लेता है।

व्योमेति बिन्दुः इति नादेतीन्दु लेखा
रूपेति वाक् भव तूनः इति मातृकेति
निष्यन्द मान सुख बोध सुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्य वतां जनानाम्।

-अम्बस्तवः ३

चारों ओर सर्वत्र व्याप्त, बिन्दु, नाद, इन्दुलेखा (चन्द्रकला) एवं वाक् सरस्वती मातृका 'अ से क्ष' तक स्वरूप वाली द्रवीभूत होकर सौभाग्य वाले भक्तों पर कृपा करके अपना स्वरूप प्रकट करती है।

इसीलिए आदि शंकराचार्य ने गौरी दशकम् में कहा है-

आदि क्षान्तमक्षरमूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूतकदम्ब प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां
गौरीमम्बां अम्बुरूहाक्षीमश्ऽहमीढ़े।।

'अ' वर्ण से लेकर संयुक्त,वर्ण **'क्ष'** तक अक्षर रूप में विलास मुद्रा में रमण करती हुई, युग युगान्त से सृजन करती हुई, शब्द ब्रह्म स्वरूप आनन्दस्वरूपा गौरवर्णा - गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

कादि विद्या के अन्तर्गत-वाग्भव कूट की साधना इस प्रकार है-

ऐं अं नमः ललाटे। ऐं आं नमः मुखवृत्ते।
ऐं इं नमः दक्षिण नेत्रे। ऐं ईं नमः वाम नेत्रे।
ऐं उँ नमः दक्षिण कर्णे। ऐं ऊँ नमः वाम कर्णे।
ऐं ऋं नमः दक्षिण नासायां। ऐं ॠं नमः वाम नासायां।

ऐं लृं नमः दक्षिण गण्डे। ऐं लृं नमः वाम गण्डे।
ऐं एं उर्ध्वोष्ठे। ऐं ऐं नमः अधरोष्ठे।
ऐं ओं नमः उर्ध्वदन्त पक्तौ। ऐं औं नमः अधोदन्त पंक्तौ।
ऐं अं नमः मूर्ध्नि। ऐं अः नमः मुखे।
ऐं कं नमः दक्षिण बाहु मूले।
ऐं खं नमः दक्षिण कूपरे। ऐ गं नमः दक्षिण मणि बंधे।
ऐं घं नमः दक्षिण हस्तांगुलि मुले।
ऐं ङं नमः दक्षिण हस्तांगुल्यग्रे।
ऐं चं नमः वाम बाहु मूले। ऐं इं नमः वाम कपूरे।
ऐं जं नमः वाम मणिबन्धे। ऐं झं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे।
ऐं टं नमः दक्षिण पादमूले। ऐं ठं नमः दक्षिण जानुनि।
ऐं डं नमः दक्षिण गुल्फे। ऐं ढं नमः दक्षिण पादांगुलि मूले।
ऐं णं नमः दक्षिण पादांगुल्यग्रे। ऐं तं नमः वाम पादमूले।
ऐं थं वाम जनुनि। ऐं दं नमः वाम गुल्फे।
ऐं धं नमः वाम पादांगुलि अग्रे।
ऐं पं नमः दक्षिण पार्श्वे।
ऐं फं नमः वाम पार्श्वे। ऐं बं नमः पृष्ठे।
ऐं मं नमः उदरे। ऐं यं त्वगात्मने नमः हृदि।
ऐं रं अ सृगात्मने नमः दक्षिणांसे।
ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि।
ऐं वं मेदात्मने नमः वामांसे।
ऐं शं अ स्थात्मने नमः हृदयादि दक्ष भुजान्तम्।
ऐं भां मज्रजात्मने नमः हृदयादि वाम भुजान्तम्।

ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्म।
ऐं हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्ताम्।
ऐं परमात्मा नमः हृदायादि मस्तकानाम्।

(इति सृष्टि-न्यासः)

सप्त मातृकाएं जननी हैं, वर्ण कर्त्ता शिव जनक है, वही सृष्टि कर्त्ता है। वर्ण तथा सप्त मातृकाओं का यही पारस्परिक संबंध है। महेश्वर सूत्र, चौदह सूत्र, शिव के आनन्द नृत्य से ही प्रस्फुटित हुए है।

सप्त मातृकाओं का अपना वाहन भी है, जैसे ब्रह्माणी का हँस है जो वास्तव में सः + अहम ही है। माहेश्वरी का वाहन वृषभ, कौमारी का मयूर वाहन है। सप्तमातृका रूपी वर्णमाला से वर्णित मंत्रों में वर्णक्रम, संख्या, उच्चारण, वर्ण निर्देश, लिपि एवं वर्ण का ज्ञान भी होना चाहिए। चेष्टा इंगित करना है, जिसमें न्यास भी सम्मिलित है।

ऊँ सर्वं रूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।।

वर्णात्मिा सप्तमातृका सर्वरूपमयी दिव्य स्वरूपा देवी है, यह जगत भी सर्व देवमयी है। इसीलिए इस जगत को सप्तलोकों -भूः भुवः स्वः महः जनः तपः में भिन्नता होते हुए भी चैतन्य स्वरूप होने के कारण समरसता भी है, और सौंदर्य की अनुभूति भी।

सप्तमातृका काव्य की मूल प्रेरक शक्ति का छन्दात्मक स्वरूप है। यह आनन्द की अवस्था है, और काव्य शास्त्र में अमर्त्य तथा मनोमय कोश के लिए अभीप्सित है, वरेण्य है।

समरसता में भी जब घर्षण आता है, तब वह अवस्था स्फोट की अवस्था कहलायी जाती है। काव्य शास्त्र में भी 'ध्वनि' के प्रसंग में घर्षण आता है। अतः सप्तमातृका प्रत्येक ध्वनि मे निहित है। यह मातृका का स्वभाव है।

सप्तमातृकाओं के द्वारा भी श्रीविद्या, श्रीसूक्त को समझा जाता है। 'श्रीविद्या' ही चित्-शक्ति है। चित् शक्ति जब लीला से अथवा 'शिव' के स्वातन्त्रय भाव से शब्द-शरीर धारण करती है, तभी आगम एवं स्वगत मंत्रों द्वारा, श्लोकों एंव बीजाक्षरों से देवी के द्विभुजा, चर्तुभुजा, अष्टभुजा, दशभुजा एवं अष्टादशभुजा का हम आवरण देख लेते हैं। अखिल प्रमाणों की प्रमातृ, चित्-शक्ति नाम को धारण कर लेती है।

लक्ष्मी अष्टोत्तर-शतनामावलिः

।। लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि ।।

108 Names of Shri Mahâlakshmi

१. ओं प्रकृत्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi as 'Prakriti'—the nature.

२. ओं विकृत्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi as 'Vikrati' that is all mutation.

३. ओं विद्यायै नमः

Namaskar to the Lakshmi as the transcendental knowledge.

४. ओं सर्व भूत हित प्रदायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is ever graceful for all animate beings.

५. ओं श्रद्धायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shraddhâ' as the devotion, in the Homa-Yajnya Paddhati.

६. ओं विभूत्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vibhuti' the grandeur.

७. ओं सुरभ्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Surabhi'—the celestial Mother.

८. ओं परमात्मि-कायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is the 'Parmatamika'-the Eternal self of all.

९. ओं वाचे नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is the Vâch/Vâk—the primal sound.

१०. ओं पद्मालयायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is having Her abode in the'Lotus'

११. ओं पद्मायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is the 'Padma' born from the Sarovar—lake of fertility.

१२. ओं शुचयै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shuchi'—abiding in the purity.

१३. ओं स्वाहायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Swâhâ'—the invocation to the Devatâs, during Yajnyas—through Ahutis.

१४. ओं स्वधायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Svadhâ'—an oblations to the deceased through water and sesame.

१५. ओं सुधायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Sudhâ'—the Amritam—ambrosia.

१६. ओं धन्यायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is. Dhanyâ'—who is conferring wealth and prosperity.

१७. ओं हिरण्मय्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Hiranyamayi'—the cosmic egg.

१८. ओं लक्ष्म्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is all blissful Mother providing peace, progress and prosperity.

१९. ओं नित्य-पुष्टायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Nitya Pushti'—the ever -strength giving Shakti.

२०. ओं विभावर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vibhâwari'—the essence of turmeric and eternally also She is the Râtri—Night.

२१. ओं अदित्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Aditi'—the Mother of the Devatâs—the effulgent cosmic powers.

२२. ओं दित्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Diti'—the Mother of the Daityas, who abides as Alakshmi then.

२३. ओं दीप्तायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Deepti'—the Mother of all the Effulgence and luster.

२४. ओं वसुधायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vasudhâ'—the Mother Earth.

२५. ओं वसुधारिण्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vasudhârini' — the holder of the Eight Vasus.

२६. ओं कमलायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kamalâ'—who holds the Lotus in Her hand.

२७. ओं कान्तायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kantâ'—the Mother with all effulgence and brightness.

२८. ओं क्षमायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kshamâ'—the Mother who pardons the devotees.

२९. ओं क्षीरोद-संभवयै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kshira-ud-Sambhavâ—born from the 'Milky Ocean'.

३०. ओं अनुग्रह-परायै नमः

१५. ओं सुधायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Sudhâ'—the Amritam—ambrosia.

१६. ओं धन्यायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is. Dhanyâ'—who is conferring wealth and prosperity.

१७. ओं हिरण्मय्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Hiranyamayi'—the cosmic egg.

१८. ओं लक्ष्म्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is all blissful Mother providing peace, progress and prosperity.

१९. ओं नित्य-पुष्टायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Nitya Pushti'—the ever -strength giving Shakti.

२०. ओं विभावर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vibhâwari'—the essence of turmeric and eternally also She is the Râtri—Night.

२१. ओं अदित्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Aditi'—the Mother of the Devatâs—the effulgent cosmic powers.

२२. ओं दित्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Diti'—the Mother of the Daityas, who abides as Alakshmi then.

२३. ओं दीप्तायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Deepti'—the Mother of all the Effulgence and luster.

२४. ओं वसुधायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vasudhâ'—the Mother Earth.

२५. ओं वसुधारिण्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vasudhârini' — the holder of the Eight Vasus.

२६. ओं कमलायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kamalâ'—who holds the Lotus in Her hand.

२७. ओं कान्तायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kantâ'—the Mother with all effulgence and brightness.

२८. ओं क्षमायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kshamâ'—the Mother who pardons the devotees.

२९. ओं क्षीरोद-संभवयै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Kshira-ud-Sambhavâ—born from the 'Milky Ocean'.

३०. ओं अनुग्रह-परायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Anugraha-parâ'—the graceful Mother bestowing all kindnes.

३१. ओं ऋद्धये नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is All 'Riddhi'—the riches anmd accomplishment.

३२. ओं अनघाये नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is with all purity and truthfulness.

३३. ओं हरि-वल्लभायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Harivallabhaa'—the Energy form of Hari—Vishnu.

३४. ओं अशोकायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Ashokâ'—without any problem, being without any sorrow.

३५. ओं अमृतायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Amrita'—the Immortal Nectraine.

३६. ओं दीप्तायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Deepti'—the great Luster.

३७. ओं लोक-शोक-विनाशिन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Loka-Shoka—Vinâshini', who destroys all the misfortunes of this transitory world.

३८. ओं धर्म-निलयायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Dharma-Nilaya'—the Abode of Dharmas.

३९. ओं करूणायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Karunâ'—the Mother with compassion.

४०. ओं लोक मात्रे नमः

Namaskar to the Lakshmi, Who is 'Lokamâtâ'—the Mother of the fourteen lokas or realms.

४१. ओं पद्म प्रियायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padma-Priyâ'—having liking for Lotuses.

४२. ओं पद्महस्तायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padma hastâ' holding a lotus in her hand.

४३. ओं पद्माक्ष्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padmâkshi', having eyes that resemble the lotus.

४४. ओं पद्मा-सुन्दर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padma Sundari'—looking like the most beautiful Lotus.

४५. ओं पद्मोद्भवायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padma-Udbhava'—born from the seed of the Lotus.

४६. ओं पद्म-मुख्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padmamukhi'—having face,which resembles the Lotus.

४७. ओं पद्मनाभ-प्रियायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padmanâbha-Priya', very dear to Vishnu, who is having Lotus like naval.

४८. ओं रमायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is adored as 'Ramâ', the consort of Vishnu or Narayana.

४९. ओं पद्म-माला-धरायै नमः

49 Namaskar to the Lakshmi, who wears the garland of lotus roots.

५०. ओं देव्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Devi', the Divine Mother, being Mother Divinity.

५१. ओं पद्मन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padmini'—the lotus.

५२. ओं पद्म-गधिन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Padmagandhini'—the fragrance of a lotus.

५३. ओं पुण्य-गंधायै नमः

Namaskar to the Lakṣhmi, who is 'Punyagandhâ'—the spriitual fragrance.

५४. ओं सु-प्रसन्नायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Suprasannâ'—always in happy form.

५५. ओं प्रसादाभि-मुख्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is' Prasâda Abhimukhi', bestowing grace for ever—Prasadam.

५६. ओं प्रभाये नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Prabha'—the solar rays.

५७. ओं चंद्र-वदनायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Chandravadanâ'—having the luminous face of the Moon.

५८. ओं चन्द्रायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Chandra'—the Moonlit light.

५९. ओं चन्द्र-सहोदर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Chandra Sahodari'—who is the sister of Chandramâ—the Moon.

६०. ओं चतुर्भुजायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Chaturbhujâ'—having four arms.

६१. ओं चन्द्र-रूपायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Chanmdraroopâ' looking like the luminous Moon.

६२. ओं इन्दिरायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Indira'- the Indrâkshi Devi.

६३. ओं इन्दु-शीतलायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Indushitalâ'- who is graceful with cooling effects of the Moon.

६४. ओं आह्लाद जनन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Aahlada Janani',who is Mother of all pleasure and spiritual happiness.

६५. ओं पुष्टायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Pushti'—the Nourishment giving Divinity.

६६. ओं शिवायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shivâ'—the Most Benign Mother.

६७. ओं शिव-कर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shivakaryi' doing all good through spiritual evolution.

६८. ओं सत्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Satyâ'—the base of all spirituality.

६९. ओं विमलायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vimalâ'—who is all crystal clear in appearance. She is Saraswati

७०. ओं विश्व जनन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vishwa-Janani' the Universal Mother.

७१. ओं तुष्टये नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Tushti'—who is providing All contentment.

७२. ओं दारिद्रय नाशिन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Daridrya Nâshni'—who removes all poverty, ill omens and ill fate.

७३. ओं प्रीति पुष्करिण्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Priti-Pushakarini' —as being the admirer of 'Pushkara' —the celestial Lotus.

७४. ओं शांतायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shântâ'—who is All peace.

७५. ओं शुक्ल-माल्यां-बरायै नमः

Namaskar to the Lakshmi who is 'Shukla – Mâlâ-Ambara' — having liking for the garland of white flowers.

७६. ओं श्रियै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shriyâ'—the all benevolence.

७७. ओं भास्कर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is all solar Effulgence.

७८. ओं बिल्व-निलयायै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is 'Bilava-Nilayayâ', the abode of the Devi in the Bilva tree.That is why,it is known as the Shri Phala.

७९. ओं वरा-रोहायै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is 'Varârohâ'— whose ascent is very excellent.

८०. ओं यशस्विन्यै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is, 'Yashasvini'— being graceful Mother of all prosperity, with elegance.

८१. ओं वसुंधरायै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is 'Wasundharâ— holding the Eight Vasus, as well as the Earth planet.

८२. ओं उदारांगायै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is' Udarânga', having her generous look within body. She is Sarva Mangalâ Devi.

८३. ओं हरिण्यै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is 'Harini'—the female deer.

८४. ओं हेम-मालिन्यै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is 'Hemamâlini',— adored with the white garland of flowers.

८५. ओं धन-धान्य कर्यै नमः
Namaskar to the Lakshmi, who is 'Dhanya-Dhân-Kari' –the giver of the all cereals, and food stuffs.

८६. ओं सिद्धये नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Siddhâ'—the perfection in devotion, Tapasyâ and adoration.

८७. ओं स्त्रैण-सौत्यायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Strain Saumayai'—the Digital Moon, with Tithis and Nakshatras.

८८. ओं शुभ-प्रदायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shubha-Pradâ'—the bestower of all auspiciousness.

८९. ओं नृष्वेश्म गमानदायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Nripa-Veshma-gamânadâ' - the blissful entrance in the royal courts of Nripa —the Indra.

९०. ओं वर-लक्ष्म्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vara-Lakshmi; the giver of the Boons.

९१. ओं वसुप्रदायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is'Vasupradâ'—the giver of all materialistic pleasures available on the Earth.

९२. ओं शुभायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Shubhâ', the All Auspiciousness.

९३. ओं हिरण्य-प्रकारायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Hiranya Prâkârâ', having the Eastern side of Asana of Gold.

९४. ओं समुद्र-तनयायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Samudra-Tanaya'—being the Daughter of the Great Ocean.

९५. ओं जयायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is'Jayâ'—the associate of Pârvati-Umâ Devi.

९६. ओं मंगल-देव्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Mangalâ' Devi—the Divine Mother as Mangalâ Devi.

९७. ओं विष्णु-वक्षःस्थल-स्थितायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vishnu-Vaksha—Sthala-Sthitaya' always in the heart of Shri Vishnu, being Vaishnavi Shakti.

९८. ओं विष्णु-पत्न्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Vishnu-Patni', the consort of Vishnu.

९९. ओं प्रसन्नाक्ष्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Prasannâ Akshi', with eyes filled with All happiness.

१००. ओं नारायण-समा-श्रितायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Nârayana-Samâ-Aishritâ', being the Integral form of the Nârayana, who is Vishnu.

१०१. ओं दारिद्र्य-ध्वंसिन्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Daridrya-Dhvansinyai', the destroyer of all poverty, misfortunes etc.

१०२. ओं देव्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is Devi—Mother Divinity.

१०३. ओं सर्वोपद्रव निवारिण्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Sarva-Upadrava-Nivârini'—the destroyer of all natural calamities.

१०४. ओं नवदुर्गायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Nava Durgâ' being an aggregate of the Nine Appearances of Devi Durga'.

१०५. ओं महाकाल्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Mahakali', as the First incarnation of the Devi as Shakti.

१०६. ब्रह्म विष्णु शिवात्मिकायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Brahmâ—Vishnu—Shivâtmikâ'— the integration of Brahmâ, Vishnu and Shiva as Maheshvara.

१०७. ओं त्रिकाल ज्ञान संपन्नायै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Trikâla Jnana—Sampanna', being the very existence of the past, present and future.

१०८. ओं भुवनेश्वर्यै नमः

Namaskar to the Lakshmi, who is 'Bhuvaneshvari'—the Sovereign Supreme of the universe and one among the Dashamahâ Vidyâ.

इति— Concluded in the 108 Names of Lakshmi Devi

ॐ खड्गमाला

ॐ खड्गमाला धारिणीं श्री चक्रेश्वर ध्यान मंत्र

The Dhyâna Mantra of the Khadagamâlâ Dhârinim, who is the Shri Chakreshwari and Chakreshwara.

अथ ध्यान मंत्र

ह्रीं कारानन गर्भितानल शिखां सौः क्लीं क्लां बिभ्रतीं
सौ वर्णाम्बर धारिणीं वरसुधा धौतां त्रि-नेत्रो-ज्ज्वलां।
वन्दे पुस्तक पाशमङ्कुश धरां स्रग्भूषिता-मुज्ज्वलां
त्वां गौरीं त्रिपुरां परात्पर कलां श्रीचक्र संचारिणीम्।।१।।

I bow at the feet of Shri Chakra, who is always adored as the 'Sanchârini' in the celestial motion, to make the universe within the Three realms of creation, sustenance and dissolution. She holds the Vedas, a noose and goad in Her hands. She is lustrous and illumining. She is having a garland of pearls around her neck. She is the very Self of the —Hrimkâra Bijâkshara, which has sprung from her Mouth. Her Shikha —tuft is the Agni Tattva. She expands the 'seed—sound', which is 'Sauh' and 'Kleem'. She holds the space, which is all Divinity just like the 'Hiranyagarbha'.

She graces with Her Abhaya Mudrâ, which is the cause of all Amritam. She is having Three eyes, which are Surya, Soma and Anala.

I make my obeisance to Gauri. She is adored as the Tripura. She is all immanent and transcendental, as

Parâ and Parâtparâ, which is beyond understanding of the Tridevas as well.

अस्य श्री शुद्ध शक्ति माला महा मन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायी वरुणादित्य ऋषयः देवी गायत्री छन्दः सात्विक ककार भट्टारक पीठ स्थित कामेश्वराङ्क निलया महा कामेश्वरी श्री ललिता भट्टारिका देवता, ऐं बीजं क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं मम खड्ग सिद्ध्यर्थे सर्वा भीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः, मूल मन्त्रेण षडङ्ग न्यासं कुर्यात्।

Varuna and Aditya are the Rishis of this Shri Shuddha Shakti Mâla, Mahâ Mantra, who is the Sovereign Supreme of the 'Karma Indriyas' and the 'Gyana Indriyas'. The Chhanda is the Gâyatri Devi. She is seated with Kakâra, which is Sâtvik—Bhattârka Peetha (Pradyumn Peetha). She is always with the Kameshvara-Shiva. She is Mahâ Kâmeshvari Herself, adored as the Lalitâ Bhâttarikâ Devatâ. Ai'M is the Bija—Seed. Kleem is Shakti, Sauh is Kilaka. May She, who is the giver of all that is spiritual in essence be along with the desired merits, as in the Khadga. I perform the Japah and the Viniyoga—an invocation, with the prescribed Moola Mantra.

ध्यानम्

तादृशं खड्ग माप्नोति येव हस्त स्थितेन वै
अष्टादश महा द्वीप सम्राड् भोक्ता भविष्यति।।२।।

She is the embodiment of Khadga, looks like Khadga, which is the Moon crescent. That Khâdga is held in Her hand. She controls the Eighteen Mahâ Dveeps or realms. She is the Mother Divinity, who is the bestower of all pleasures and bliss.

'Khadga' in Sanskrit means 'sword', but in the esoteric application, it is the inherent power, which is all lusterous and luminous like the Moon, radiant and lusterous like the Sun, stainless without any mutation like the Hiranyagarbha. It is the Prâddhânik Rahasya as the essential nature of the Shri Chakreshwari.

आ रक्ताभां त्रिनेत्राम-रुणिम-वयनाम् रत्न-ताटङ्क-रम्याम्
हस्ताम्भोजै-स्स-पाशाम्कुश-मदन-धनुस्सायकै-र्विस्फुरन्तीम्
आपीनो-त्तुङ्गु वक्षोरुह-कलश-लुठत्तार-हरो-ज्ज्वलाङ्गीं
ध्यायेदम्भो-रुह-स्थाम-रुणिम-वसनामीश्वरी-मीश्वराणाम्।।३।।

Her Three eyes are all red in its look. She is having the hue of the early dawn. Her jewellery and ear-ring is all celestial. She holds the Amboja—Lotus. Pâsha—snare, Ankusha—goad, Dhanush, Sâyaka—bow and arrows, which are ever ready to annihilate the Daityas and Asuras. 'Her breast is filled with the Amritam. Her nacklace is all shining and illuminating the whole universe.

I do concentrate on the Supreme, Sovereign Divine Mother Chakreshvari, who looks like red lotus, She is verily, the Ishvarii who is the Absolute Mother Divinity of all the Ishvaras or the Trikoti Devatas.

लमित्यादि पञ्च पूजाम् कुर्यात्, यथा शक्ति मूल मंत्रम् जपेत्। मंत्रः ऐं क्लीं सौः

This is the highly occult Mantra, hence I have not been permitted by Pandit Jagannath Sibu—my spiritual mentor not to translate it in English. These are the Kavacha Mantras.

अथ खड्गमाला

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरी,

हृदय देवी,	शिरो - देवी,
शिखा देवी,	शिखा - कवचदेवी,
नेत्र - देवी,	अस्त्र-देवी,
कामेश्वरी,	भगमालिनी,
नित्य - क्लिन्ने,	भेरुण्डे,
वह्नि - वासिनी,	महा - वज्रेश्वरी,
शिव - दूती,	त्वरिते,
कुल - सुन्दरी,	नित्ये,
नील - पताके,	विजये,

सर्व - मङ्गले, ज्वाला - मालिनी,
चित्रे, महा - नित्ये, परमेश्वर - परमेश्वरी - मित्रेश - मयी,
उड्डीश - मयी, चर्यानाथ - मयी,
लोपामुद्रद्मा - मयी, अगस्त्य - मयी,
कालताप - शमयी, धर्माचार्य - मयी,
मुक्त - केशीश्वर-मयी, दीप - कलानाथ-मयी,
विष्णु - देवमयी, प्रभाकर - देवमयी,
तेजोदेव - मयी, मनोजदेव - मयि,
कल्याणदेव - मयी, वासुदेव - मयी,
रत्नदेव - मयी, श्रीरामानन्द - मयी,
अणिमा - सिद्धे, लघिमा - सिद्धे,
गरिमा - सिद्धे, महिमा - सिद्धे,
ईशित्व - सिद्धे, वशित्व - सिद्धे,
प्राकाम्य - सिद्धे, भुक्ति - सिद्धे,
इच्छा - सिद्धे, प्राप्ति - सिद्धे,
सर्वकाम - सिद्धे, ब्राह्मी,
माहेश्वरी, कौमारि,
वैष्णवी, वाराही,
माहेन्द्री, चामुण्डे,
महा - लक्ष्मी, सर्व - सङ्क्षोभिणी,

सर्व - विद्राविणी, सर्वाकर्षिणी,
सर्व - वशङ्करी, सर्वोन्मादिनी,
सर्व - महाङ्कुशे, सर्व - खेचरी,
सर्व - बीजे, सर्व - योने,
सर्व - त्रिखण्डे, त्रैलोक्य - मोहन चक्र - स्वामिनी,
प्रकट - योगिनी, कामा - कर्षिणी,
बुद्ध्या - कर्षिणी, अहंकारा - कर्षिणी,
शब्दा - कर्षिणी, स्पर्शा - कर्षिणी,
रूपा - कर्षिणी, रसा - कर्षिणी,
गन्धा - कर्षिणी, चित्ता - कर्षिणी,
धैर्या - कर्षिणी, स्मृत्या - कर्षिणी,
नामा - कर्षिणी, बीजा - कर्षिणी,
आत्मा - कर्षिणी, अमृता - कर्षिणी,
शरीरा - कर्षिणी, सर्वाशा - परिपूरक चक्र - स्वामिनी,
गुप्त - योगिनी, अनङ्ग - कुसुमे,
अनङ्ग - मेखले, अनङ्ग - मदने,
अनङ्ग - मदनातुरे, अनङ्ग - रेखे,
अनङ्ग - वेगिनी, अनङ्गाङ्कुशे,
अनङ्ग - मालिनी, सर्व - सङ्क्षोभण चक्र - स्वामिनी,
गुप्ततर - योगिनी, सर्व - सङ्क्षोभिणी,

सर्व - विद्राविनी, सर्वा - कर्षिणी,
सर्व - ह्लादिनी, सर्व - सम्मोहिनी,
सर्व - स्तम्भिनी, सर्व - जृम्भिणी,
सर्व - वशङ्करी, सर्व - रञ्जनी,
सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थ - साधिके,
सर्व - सम्पत्ति - पूरिणी, सर्व - मन्त्रमयी,
सर्व - द्वन्द्व - क्षयङ्करी,
सर्व - सौभाग्य-दायक चक्र - स्वामिनी,
सम्प्रदाय - योगिनी, सर्व - सिद्धिप्रदे,
सर्व - सम्पत्प्रदे, सर्व - प्रियङ्करी,
सर्व - मङ्गल - कारिणी, सर्व - कामप्रदे,
सर्व दुःख - विमोचनी, सर्वमृत्यु - प्रशमनि,
सर्व - विघ्न - निवारिणी, सर्वाङ्ग - सुन्दरी,
सर्व - सौभाग्य - दायिनी,
सर्वार्थ - साधक चक्र - स्वामिनी,
कुलोत्तीर्ण - योगिनी, सर्वज्ञे,
सर्व-शक्ते, सर्वैश्वर्य - प्रदायिनी,
सर्वज्ञान - मयी, सर्व - व्याधि विनाशिनी,
सर्वाधार - स्वरूपे, सर्व - पापहरे,
सर्व - रक्षा स्वरूपिणी, सर्वेप्सित - फल - प्रदे,

सर्व - रक्षाकर चक्र - स्वामिनी,

निगर्भ - योगिनी, वशिनी,

कामेश्वरी, मोदिनी,

विमले, अरुणे,

जयिनी, सर्वेश्वरी,

कौलि - निवशिनी, सर्व - रोगहर चक्रस्वामिनी,

रहस्य - योगिनी, बाणिनी,

चापिनी, पाशिनी,

अंकुशिनी, महा - कामेश्वरी,

महा - वज्रेश्वरी, महा - भगमालिनी,

सर्व - सिद्धिप्रद चक्रस्वामिनी, अति रहस्य योगिनी

श्री श्री महाभट्टारिके, सर्वानन्दमय चक्रस्वामिनी,

परापराति रहस्य योगिनी,

त्रिपुरे, त्रिपुरेशी,

त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरवासिनी,

त्रिपुराश्रीः, त्रिपुरमालिनी,

त्रिपुरसिद्धे, त्रिपुराम्बा,

महात्रिपुरसुन्दरी, महामहेश्वरी,

महामहाराज्ञी, महामहाशक्ते,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरी

श्री त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम्

कदंब-वन चारिणीं मुनि कदम्ब-कादंविनीं,
नितंब-जित भूधरां सुर नितंबिनी-सेविताम् ।
नवंबुरुह-लोचनाम् अभिनवांबुद-श्यामलां,
त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर सुंदरीम् आश्रये ॥१॥

You are adored as the Tripura Sundari. Your abode is in the Kadamba forest, You are adored by the Muni Kadamba as Kadambini Devi, as besing the row of clouds. She is holding the world, with the slope and ridge of mountains. Thus you are adored by the Suras Divine forces. Your eyes resemble of the new born lotus and your appearance is like the just sprung murky clouds. I take refuge under you, who is the consort of the Three eyed Shiva, gracing the 'Family of Light, i.e. 'Surya, Soma and Agni. She shows what is for our spiritual evolution 1

कदंब वन-वासिनीं कनक-वल्लकी धारिणीं,
महार्ह मणि हारिणीं मुख समुल्लस-द्वारुणींम् ।
दया विभव-कारिणी विशद-लोचनी चारिणी,
त्रिलोचन कुटुम्बिनी त्रिपुर सुंदरीम् आश्रये ॥२॥

You reside in the Kadamba forests, and you are adorned with the golden flute. I salute that beauty of the three worlds, and you wear a necklace, which is of precious gems. Your grace is radiant with the delight of nectar. Your eyes are exceedingly very precious. I take refuge under you, who is the consort

of the Three eyed Shiva, gracing the 'Family of Light, i.e. 'Surya, Soma and Agni. She shows what is for our spiritual evolution. 2

कदंब वन-शालया कुच-भरोल्लसन्मा-लया,
कुचोपमित-शैलया गुरु-कृपाल सद्वेलया ।
मदारुण-कपोलया मधुर-गीत वाचालया ,
कयापि घन-नीलया कवचिता-वयं लीलया ॥३॥

We are all jubilant playfully covered by Her from all evils, as She holds us in Her lap, which is Her dwelling in Kadambha forest. She takes our care with her garland which is kept above Her breasts. Her breast or lap is like the mountainous ridges. She is looking graceful with Her blushed cheeks. Her words are sweet toned melodious songs of eternity. Her body resembles like the bluish clouds.3

कदंब वन-मध्यगां कनक-मंडलोप-स्थितां,
षडंबरुह-वासिनीं सतत-सिद्ध सौदामि नीम् ।
विडंवित-जपा रुचिं विकच-चंद्रचूडा मणिं ,
त्रिलोचन-कुटुंबिनीं त्रिपुर सुंदरीम्-आश्रये ॥४॥

She dwells in the middle of Kadambha forest. Her seat is on the six lotus flowers, wihch is all golden disc. She showers the grace in the form of''Eternal Light'. She likes the blossomed Japakusuma flowers. She wears the Chudamani jewels. I take refuge under You, who is the consort of the Three eyed Shiva, gracing the 'Family of Light, i.e. 'Surya Soma and

Agni. She shows what is for our spiritual evolution. 4

कुचांचित-विपंचिकां कुटिल-कुंतलालंकृतां ,
कुशे शय-निवासिनीं कुटिल-चित्त विद्वेषिणीम् ।
मदारुण-विलोचनां मनसिजा रि-संमोहिनीं ,
मतंग मुनि कन्यकां मधुर भाषिणीम्-आश्रये ॥५॥

I take refuge under the celestial aura of Her being who talks sweetly. She is the daughter of sage Mathanga, whose tongue and speech is full of sweetness. She holds the Veena close to her breasts. She is looking very cute, through her curly locks. Her Asana seat is on the mat of Kusha grass. She destroys the persons having malicious consciousness. She is glowing with red eyes. 5

स्मरेत्प्रथम पुष्पीं रुधिर बिन्दु नीलांबरां,
गृहीत मधु पत्रिकां मधु विघूर्ण नेत्रां चलाम् ।
घनस्तन भरोन्नतां गलित चूलिकां श्यामलां,
त्रिलोचन कुटंबिनीं त्रिपुर सुंदरीम्-आश्रये ॥६॥

She holds the first flower of the Kamadeva. She is adorned with the red spotted Bindu, on the sky bluish canvas of fertility. She holds honey filled pot and gets intoxicated with fierce looks. Her breast is upright and Her disheveled locks are the symbols of time duration. 6

स कुंकुम-विलेपना मलक-चुंबिकं-स्तूरिकां ,
स मंदह सितेक्षणां स शर-चाप पाशांकुशाम् ।

असष जन-मोहिनीम्-अरूण माल्य भुषाम्बरा,
जपा कुसुम भासुरां जपविधौ स्मराम्यम्बिकाम ॥७॥

I meditate upon the Gracious Mother Tripura Sundari, who adorns herself with Kumkum— saffron. She is glancing at her creation with gentle smile. She is clothed with red hibiscus, and She casts a radiant look, being adored and adorned with the Kusum Japa flowers. I do make my obeisance with my Smrinam, who is the Mother Divinity of the Triple worlds, as Tripurambika. 7

पुरम्दर पुरंध्रिकां-चिकुर बंध-सैरंध्रिकां,
पितामह पतिव्रतां-पटु पटीर-चर्चारताम् ।
मुकुंद रमणीं मणि-लसदलंक्रिया-कारिणीं,
भजामि भुवनांबिकां सुर वधूटिका-चटिकाम् ॥८॥

I make my obeisance to that Mother Divinity adored as the Tripura Sundari, having Her abode in the Shri Chakreshvara Svayambhu Shilâ. She is the Universal Mother—the Goddess of the world, Who rules over the world of Purandra, also who is Lord Shiva, as well as Indra Who has got her tresses or plaited by the Shaktis of the Devatas. She is annointed with Sandal paste by the Brâhmi Shakti. The Lakshmi or Râdha or Lakshmi of Mukunda —Vishnu or Nârâyana, make the tripura Sundari to wear ornaments of gems. She has several Devis serve Her as companions. 8

श्री शंकराचार्य विरचितं त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रं संपूर्णम् ।

श्री शारिका

माता छख अष्ट-दश बो'ज़ा शाम सो'दंरी।
शिव-शक्ति एक रुपॅपिनी पानुॅ भुवनीश्वरी।।

वनाने चे' साऽरी श्रीयुक्त राजुॅ राऽज़ीश्वरी।
माऽतृकायन मंज़ कायवॅुनुॅ काऽमीश्वरी।। १

शाक्त यूगॅुच पानुॅ शोलवॅुनुॅ युगीश्वरी।
ओ३म शब्द प्रणवान प्रज़लवॅुनॅ पूर्णेश्वरी।।

ह्रीं बीजस सगवान बऽनिथ मूलादाऽरी।
चोन चऽखॅुरु छु ब्यन्द त्रिकून वृत आकाऽरी।। २

हार परबतस बदि द्राव श्री च़ऽकरुक आकार।
सगुण चऽखॅुरुं सगनोवथन बऽनिथ पानुॅ साकार।।

जूत्य् ज़ाऽलिथ ज़ोतनोवथन सु च़्यथ न्यराकार।
प्रकाश-विमर्श म्युल गव, वुछमख माऽज टाकार।। ३

जाय चाऽन्य श्रीपीठ यऽति ग्रज़ान सहस्त्रॅंआर।
षट चऽकरु बीदन करनुक छुय चोन अधिकार।।

शारिका सहस्त्रनामस मंज़ छु चोन मंत्र संचार।
माऽज व्यछ़नावतम आकार-गव-न्याराकार।। ४

शब्दमयी शक्ती हुन्ज़ छख पानुॅ सरस्वती।
महिषासुर-मर्दिनी बऽनिथ पानुॅ सरस्वती।।

शिवदूती - काऽली - करालिनी छख मधुमर्ती।
गायत्री - सावित्री - वेद माता .चुँ आद्या शक्ती।। ५

नवन च़ऽखरन मंज़ दीवी .चुँ शाम सो'न्दरी।
समवित् स्पन्द मार्गस ईकनाऽविथ पानुँ ऐन्द्री।।

प्राणस अपानस, व्यानास समानस मंज़ महोदरी।
त्रन भवनन तारवुँनुँ त्रिपुरा त्रिपोर सो'न्दरी ।। ६

स्यद्ध-पीठस प्यठ वास चोन बऽनिथ सर्वीश्वरी।
बिन्दु-त्रिकोण-वसुकोण ह्यथ चुँ पानुँ ध्याऽनीश्वरी।।

दशार-युग्मस मंज़ वुछमख राजुँ राऽज़ीश्वरी।
शेरि हय लागय स्यॅंद्रि टयोक, माऽज़ीश्वरी।। ७

खसवुँनिस वसवुँनिस त्रिकूनस मंज़ छु चोन निवास।
ब्रह्मा - विष्णु - महेश्वर करान अऽथि अन्दर वास।।

पानुँ शिवशक्ती हुन्द च्रऽक्रस मंज़ आभास।
च़े' न्येबर नुँ केंह, .चे' प्यठ छुम व्येशवास।। ८

हुम-फट शब्द बऽनिथ ताण्डव करनोवथन महीश्वर।
क-ए-ई-ल-ह्रीं सान ग्रज़नोवथन सु ज़गथ ईश्वर।।

ह-स-क-ह-ल-ह्रीं शब्दस मंज़ छु चऽक्रीश्वर।
स-क-ल-ह्रीं नादस मंज़ बऽनिथ अंर्धनाऽरीश्वर।। ९

टाकार वुछिम शारिका लागान तऽति दरबार।

यति हुर्य आऽठम दोह प्रखटन 'श्री' आकार।।
आं-शां-फ्रां शारिका छख माऽज पानुं साकार।
पादन चान्यन परन प्यमय, पूज म्याऽन्य कर स्वीकार।।१०
शेरि हय लागय लोलुं पोशन हुन्द दस्तार।
'अहम्' शब्द क्या छु, छुम नुं काँह अहंकार।।
शून्य अवस्थायि चानि वनान ब्रह्मद्वार।
यति नच़ान शारिका बऽनिथ शिलातन साकार।। ११
शारिका छख नव च़ऽक्रन हुंन्ज़ नवद्वार।
मूल प्रकृति पानुं बनेमुंच़ छि त्रिवलयाकार।।
शब्द शक्ति अग्यानस करान छख समूहार।
'जया' छि श्री शारिकायि सोज़ान पोशुं अम्बार।। १२

दुर्गा-द्वात्रिंशत्-नाममाला

दुर्गा, दुर्गार्ति-शमनी, दुर्गापद्-विनिवारिणी।
दुर्गामच्छेदिनी, दुर्गसाधिनी, दुर्गनाशिनी।।१।।

दुर्गतो-द्धारिणी, दुर्ग-निहंत्री, दुर्गमा-पहा।
दुर्गम-ज्ञानदा दुर्ग-दैत्य-लोक-दवानलया।।२।।

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्म-स्वरूपिणी।
दुर्ग मार्ग-प्रदा दुर्गम-विद्या दुर्गमा-श्रिता।।३।।

दुर्गम-ज्ञान-संस्थाना दुर्गम-ध्यान-भासिनी।
दुर्गमोहा दुर्ग-मगा दुर्गमार्थ-स्वरूपिणी।।४।।

दुर्गमासुर-संहन्त्री दुर्गमायुध-धारिणी।
दुर्गमांगी दुर्ग-मता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गाभा दुर्गदारिणी।
नामावलिं-इमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः।।
पठेत् सर्वभयात्-मुक्तो भविष्यति न संशयः।।

More expressions of the word DURGA have been revealed by the Devi Durga in THIRTY TWO names. This is the quintessence of the Shabda, with Artha, for producing the vibrations with the beginning of the word with 'द' 'D', of the Sanskrit Varnamaala. This falls the third letter of the Sanskrit Tavarga. The Akhyâna/ celestial description runs as:

After the forceful and deceitful Mahishasura—the Asura with the form of a Mahisha as killed by the Devi Herself, and all the Devatas resumed their celestial positions, and Ahutis given by the humans, well versed in the Vedas and Agamas, they approached the Devi saying: O Devi, we have been blessed, but we want some Mantras for the suffering human beings, which would free them from any trouble, turbulance and natural upheavels. This would serve a meaningful purpose of being a human being on the prithvi— the Earth planet. She acknowledged their prayer and said: O devâtas! I am revealing the Durga-Dvâtrinshan Nâma Mâla/Thirty Two Names of Durgâ to you for the welfare of humanity. These are: —

1 - Durgâ—That which cannot be approached without purity, otherwise it is difficult to approach the name of Durgâ, without being pious in body, mind and spirit. Durgâ is like a fortress, and its Bijâkshara are very secret, and needs a spiritual key to enter into that fortress.

2 - Durgatishamani—— That which subsides the downfall of the embodied souls. It helps a man/ woman to overcome that situation, which makes him/ her in the worst condition of life.

3 - Durâpadnivaarini— That which destroys all the bad omens, associated with natural calamities.

4 - Durgamachchedini— That which cuts off the fortresses of turmoils and disturbances.

5 - Durgasaâdhini—That which helps a devotee, to enter into the fort, where there is eternal peace.

6 - Durganâshini—That which destroys the empirical fortresses.

7 - Durgatodhârini— That which, relieves the devotee from infame and bad reputation.

8 - Durganihantri—That which destroys the ill-omened forts for the devotee.

9 - Durgamapaha— That which takes you beyond the fortified destinations.

10 - Durgamajnandâ— That which grants you the Jnana, which cannot easily be attained.

11 - Durgadaityalokadavanalâ—That which destroys the oceanic fire— known as hurricanes created by the Daitya, whose name was Durga-Rakshasa.

12 - Durgama— That which can lift you towards those realms, which are very difficult to reach.

13 - Durgamaloka— That which is difficult to see, or perceive.

14 - Durgamatma svaruupini—— That which is the innate natureto realize the intricacies of the Atman— self-analysis.

15 - Durgmargaprada—That which makes you cross the difficult Shakta Path of invocation.

16 - Durgamâshrita. That which is relying upon the Devi's difficult path.

17 - Durgamâshrita—That which is relying on the Durga.

18 - Durgamajnanasanasthâna— That which is itself an institution of highest learning, but approachable through the grace of Durga.

19 - Durgamadhyânbhaasini—That which appears to be the difficult approach of meditation.

20 - Durgamoha—That which is deluded by the fortresses.

21 - Durgamagâ—That which is difficult to go.

22 - Durgamarthsvaruupini—That which cannot be understood, through the word meaning.

23 - Durgamâsurasaṃhantri—That which is the killer of the Durgamasura.

24 - Durgamâyudhadhârini—That which hold the very difficulr weapons to handle.

25 - Durgamangi – That which has difficults portions to understand.

26- Durgamata—That which is difficult to explain.

27 - Durgamya—That which is difficult to reach.

28 - Durgameshvari –That which is the Sovereign Mother, difficult to understand.

29 - Durgabhiimâ—That which is difficult and heavy in appearance to handle or understand.

30 - Durgabhamâ—That which gets easily excited.

31 - Durgabhâ –That which is difficult to see, in effulgence.

32 - Durgadarini—That which is the Mother of all fortresses—physical—menta—spiritual.

Whoever reads / recites this Naamavalli, narrated by myself, he/she will ever be freed form any disturbances, harms, turbulances and upheavels in life. After revealing the Thirty two names pertaining to Her innate nature, Durga Devi then disappeared from the realm of the devatas.

श्री यंत्र

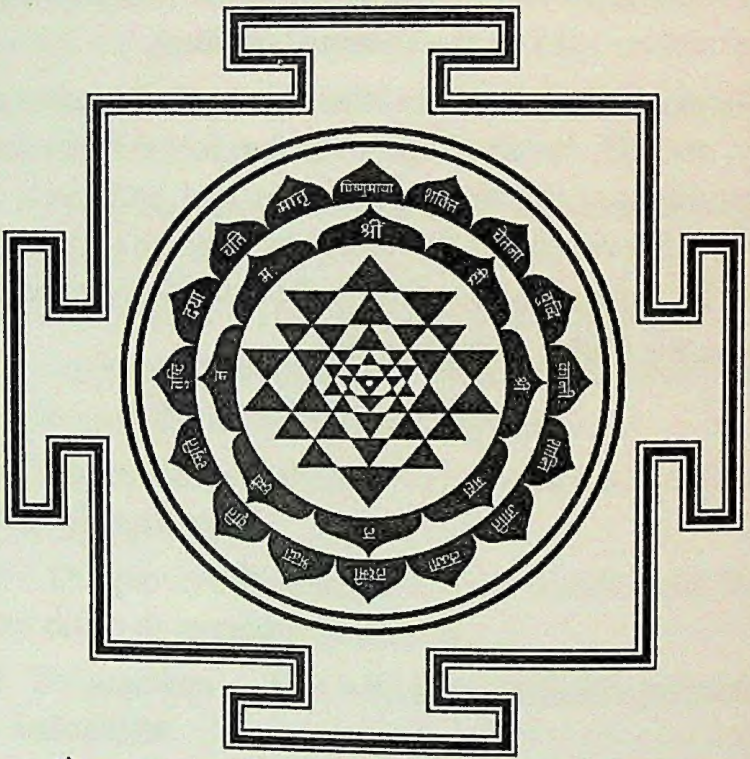

ॐ श्री चक्रेश्वराय तर्पणपराय नमः

Afterword!

Shri Chakra Tarpana Para is part of the Shri Raja Rajeshwari Stuti and the core message of Shri Chakreshwara. It is the graphic representation of the philosophy of co-existence. Being evolutionary in process, it teaches the devotees to see Immortality in the Mother Divinity as Shakti, beauty of the Sanatana Dharma. The longing for the 'Ananta Hridaya-Samavesha' is the realization of creative thinkers, poets and artists, who adore Mother Divinity as Shri Sharika, for unveiling the mystic lines ,which interplay the cosmic scene within the 'Varna Maala'. The word familiarity is dedicated to Matrika Pujanam.

Above and beyond, the Chandrakala Parikrma of Shri Sharika is like a flight path of a circling disc, which moves from one to fifteenth digit, in this process. Devotees used to start their Parikrama- Circumambulation, from 'Ganshibal' to 'Kathi Darwaza', which forms a half circle. And the circle is completed when the next itinerary is started from fifteenth to one and then to Shunya -zero. I was initiated in the Chandrakala by Saint Pandit Shri Sat Lal ji Siboo. The circle is important in Art, Science, Geometry, Literature and other fields of learning including the Satotra Literature. The universe is circular, so the Bindu, Petals and three Circles are covered by the 'Bhupura' – being the four quadrants, starting their expansion from the Bindu. It is also revered as the Sarvaanandmai Chakra which conveys the aphorism 'Shri Chakra Priyabibndu Tarpan Para'. All triangles and geometrical representations form within this circle or the Matrikas. Then circles move within the body and reach the conscious mind, which abides in Shakti.

I thank Pandit A.D.Veshin Ji for giving me the opportunity to discuss the Title of the Tarpana Para with Dr. Chaman Lal Raina, a devout researcher of the Shakti Tradition. I am sure; this book will unveil the mystic expressions of the Shri Chakra.

I bow to the power of Shri Chakra!

Dr. G. S. Raina

22nd August, 2020
Ganesh Chaturthi

Dr. Chaman Lal Raina

Dr Chaman Lal Raina is devout Researcher in the Shakti Tattva of the Kashmir Shaivism. His approach is to see the Mother Divinity in the Prakriti and Para-Parakriti. Apart from his resarch in the Comparative philosophy, during his Ph.D and Post Doctoral program, he finds the influence of the Pratyabijnya and Spanda in the Agamic Sahsranamas and the Stotra literature. His works on the Indic and the Agamic studies have been published by the University of Kashmir, University of Rajasthan and Shree Sonmnath Sanskrit University, Veraval Gujrat. He has recently authored the Shata Ashtattara Trika Vaibhavam, and edited the Jyeshttha Pradurbhava for the Sangat, Noida. Presently, he is working on the Shakti Tattva and the Agama Shastras of Kashmir, for the Deptt. of Agamas of the Banaras Hindu University. His approach to the scriptures is to take up linguistic study on the basis of the Matrika concept.

He writes in Sanskrit, Hindi, Kashmiri and Urdu.